ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

ज्येष्ठ २०८१ जून २०२४

हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव के ३५० वर्ष पूर्ण होने पर प्रस्तुत छत्रपति शिवाजी अंक (एकांकी विधा)

सेर शिवराज हैं

इन्द्र जिमि जृंभ पर, बाडव सुअंभ पर, रावन सदंभ पर, रघुकुल राज हैं।
पौन बारिबाह पर, संभु रतिनाह पर, ज्यौं सहस्रबाह पर, राम द्विजराज हैं।
दावा द्रुम दण्ड पर, चीता मृग झुण्ड पर, 'भूषण' वितुण्ड पर, जैसे मृगराज हैं।
तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर, त्यौं मलिच्छ बंस पर, सेर शिवराज हैं।

– महाकवि भूषण

जैसे इन्द्र जृंभासुर पर, बड़वानल (समुद्र की आग) समुद्र पर, भगवान श्रीराम अभिमानी रावण पर, हवा बादलों पर, शिव कामदेव पर और भगवान परशुराम सहस्रार्जुन पर, दानावल (जंगलों की आग) वृक्षों के समूह पर, चीता हिरणों के झुण्ड पर, सिंह हाथी पर, सूर्य अंधकार पर, भगवान श्रीकृष्ण कंस पर भारी हैं उनका विनाश करने वाले हैं। भूषण महाकवि कहते हैं कि विधर्मी म्लेच्छों पर शिवाजी महाराज भी वैसे ही भारी हैं।

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

ज्येष्ठ	२०८१	वर्ष	४४
जून	२०२४	अंक	१२

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फडके

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

आधुनिक भारत के इतिहास में छत्रपति शिवाजी महाराज एक ऐसे महान शासक हैं जिनके जीवन का हर पक्ष राष्ट्रीयता से इतना ओतप्रोत है कि यदि उन्हें **जीवन्त राष्ट्रधर्म** कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति न होगी। जैसे भगवान श्रीराम को 'विग्रहवान धर्म' कहा गया है वैसे ही **शिवाजी महाराज राष्ट्रीयता की सचल प्रतिमा** ही थे। यही कारण है कि हिन्दूपदपादशाही के संस्थापक श्रीमंत शिवाजी राजे भोंसले के राज्याभिषिक्त होने के ३५० वर्ष पूर्ण होने पर भी वे आज इतने ही प्रासंगिक हैं। यद्यपि आज हमारे देश में लोकतन्त्रात्मक व्यवस्था है और शिवा-काल राजतन्त्रात्मक शासन था लेकिन **'राजा' प्रजा का स्वामी नहीं सेवक है यह लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली की मूल भावना तथा वह परमात्मा के प्रतिनिधि स्वरूप अपनी प्रजा, मातृभूमि और देशधर्म, संस्कृति की रक्षा के लिए व्रतधारी सेवक है। उसका सम्पूर्ण सामर्थ्य, क्षमता, योग्यता और पराक्रम मातृभूमि की सेवा के साधन मात्र हैं। ऐसा जीवन में चरितार्थ करने वाले शिव-छत्रपति अपने आप में अनूठे उदाहरण हैं।** यह अंक उन्हीं पर केन्द्रित है। यद्यपि उनके अगाध गंगाधारा जैसे चरित्र से यह कुछ बून्दें ही हैं। लेकिन ये कुछ छींटें भी हमें चारित्रिक शुचिता प्रदान करने हेतु पर्याप्त हैं।

यह अंक डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२३ के लिए देशभर के अनेक लेखकों द्वारा शिवाजी के जीवन चरित्र पर लिखे गए एकांकियों में विद्वान निर्णायकों द्वारा प्रदत्त क्रमानुसार चयनित एकांकियों की यथावत प्रस्तुति ही है। इसलिए शिवाजी महाराज के जीवन काल की कुछ घटनाएँ जो इन चयनित एकांकियों में समाहित थीं वे उसी क्रम में यहाँ प्रस्तुत की गई हैं। केवल अंतिम रचना प्रतियोगिता में सम्मिलित न थी जो प्रसंग विशेष की दृष्टि से महत्वपूर्ण होने से सम्मिलित की गई है। कालक्रम की अपेक्षा रचनाओं को यथावत पुरस्कृत क्रम में ही प्रस्तुत कर दिया गया है। यह अंक विद्यार्थियों को शिवाजी के चरित्र का परिचय तो देगा ही उन्हें मंचन योग्य श्रेष्ठ एकांकी भी देगा। आपसे यह अपेक्षा भी है कि आप स्वयं भी ऐसे ऐतिहासिक प्रेरणा-पुंजों पर रचनाएँ लिखें, पढ़ें और जीवन में श्रेष्ठता धारण करें।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

एकांकी	लेखक	
शिवाजी का स्वराज	डॉ. अनिल बाजपेयी	०५
अमूल्य गुरु मंत्र	सौ. पद्मा चौगांवकर	१४
छत्रपति शिवाजी	कुसुम अग्रवाल	१८
निराला वीर शिवा	डॉ. सुधा जगदीश गुप्ता	२१
उदारमना क्षमादानी छत्रपति शिवाजी महाराज	डॉ. इन्दु गुप्ता	२७
अफजल खान का षड़यंत्र	इन्जी. आशा शर्मा	३३
छत्रपति शिवाजी की सूझबूझ	ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'	३७
किशोर शिवाजी का संकल्प	राजेन्द्र प्रसाद श्रीबास्तव	४१
स्वराज्य सेवक शिव छत्रपति	गोपाल माहेश्वरी	४५

आलोक – प्रथम पाँच एकांकी पुरस्कृत हैं।

पूज्य स्वामी श्री गोविन्द देव गिरी जी को अवधेश अंक भेंट

इन्दौर। ०९ मई २०२४ 'देवपुत्र' के प्रधान संपादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना ने श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के कोषाध्यक्ष पूज्य स्वामी श्री गोविन्द देव गिरी जी महाराज को आज इन्दौर के अहिल्या गौशाला में आयोजित एक समारोह में देवपुत्र का **अवधेश विशेषांक** भेंट किया। अंक को देखकर स्वामीजी आनन्द विभोर हो उठे एवं देवपुत्र के लिए शुभाशीष प्रदान किए। (चित्र उसी अवसर का)

ज्ञातव्य है कि अयोध्या में श्रीरामलला के भव्य प्राणप्रतिष्ठा समारोह के ऐतिहासिक अवसर पर 'देवपुत्र' की ओर से प्रस्तुत भगवान श्रीराम के पूर्वजों का परिचय देने वाला अवधेश विशेषांक संपूर्ण देशभर में अत्यंत प्रशंसित हुआ।

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

शिवाजी का स्वराज

– डॉ. अनिल वाजपेयी

(पृष्ठ भूमि में तलवारों एवं हर–हर महादेव की आवाजें, अल्लाह हो अकबर; गड़गड़ाहट एवं कमेन्ट्री)

उद्घोषणा – भारत वर्ष १६६६, भारतीय इतिहास का वह काल, जिसमें हिन्दुस्थान का जर्रा–जर्रा मुगल सम्राट आलमगीर औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता के प्रचण्ड ज्वाला में झुलस रहा है, शाहजहाँ जेल के सीखचों के पीछे तड़पकर दम तोड़ चुका है, और औरंगजेब के भाई–शुजा, मुराद, दाराशिकोह बेरहमी से कत्ल कर दिये गये हैं और बहादुर राजपूत औरंगजेब के सिपहसालार बन कर शेर से सियार हो चुके हैं।

परन्तु तलवारों की झंकार, तोपों की आवाज और हर–हर महादेव का जयघोष यह बता रहा है कि भारतीय गौरव और अस्मिता ने अभी आत्म समर्पण नहीं किया है, हिन्दुत्व अभी मरा नहीं है, और राष्ट्रीय गौरव धूल में नहीं मिला है और इस राष्ट्रीय गौरव का महान नायक वीर मराठा शिवाजी महाराज औरंगजेब के राजपूत सिपहसालार जयसिंह के साथ सह्याद्रि की तपती चट्टानों पर मैदान–ए–जंग में जूझ रहा है।

(पर्दा खुलेगा और मंच पर शिवाजी को पराजय की सूचना देता मंत्री) परन्तु उफ् हिन्दुस्थान का

दुर्भाग्य कि अन्ततः वह मराठा शेर वीर शिवाजी पुरन्दर के किले में मुगल सेनाओं से घिर गया और फिर हुई ११ जून १६६५ में पुरन्दर की संधि। लेकिन क्या इतिहास यहीं थम गया? नहीं आइये देखें आगे क्या हुआ?

दृश्य – एक

(जयसिंह का शिविर, जयसिंह आसन पर)

जयसिंह – (ठहाका लगाते हुए) आइये शिवाजी महाराज! स्वागत है। देखा हमारी तलवार का जौहर! एक राजपूत ने वह कौल, वह वचन पूरा कर दिया है जो उसने औरंगजेब को आपको पकड़ने को लेकर दिया था। आपकी पराजय, आपकी शिकस्त का पैगाम आलमगीर औरंगजेब को बेइन्तहा खुशी देगा।

शिवाजी – हुंह! राजपूत का वचन! एक सच्चे राजपूत को वचन! क्षमा करें मिर्जा राजा जयसिंह, आप एक सच्चे राजपूत नहीं है। राणा संग्राम सिंह और राणा प्रताप के वंशज मुगलों की चाकरी करें, उनके तलवे चाटें और अपने को सच्चा राजपूत कहें। अरे! एक वो राजपूत थे, जो मुगलिया सल्तनत के विरुद्ध अपनी जमीन, अपने धर्म और अपनी आजादी की शमां पै कुर्बान हो गये और एक आप हैं जो अपने ही खून की ललिमा खो बैठे हैं। जो परवश होकर बहता है वह खून नहीं पानी होता है। बनते हैं राजपूत और अपना जमीर ही खो दिया।

जयसिंह – (व्यंग करते हुए) शिवाजी महाराज आप जैसे एक पराजित और शक्तिहीन शरणागत राजा को उपदेश देना शोभा नहीं देता। आप पराजित हो चुके हैं, आपको अपने तेईस किले और तमाम सूबे मुगलों को सौंपने होंगे। और सुनिए आज के बाद अब आप भी मुगल सम्राट औरंगजेब की खिदमत में मुगलों के लिए युद्ध और सेवा करेंगे। मैंने हुजूरेआला को विजय का पैगाम भेज दिया है। हुकुम है कि आपको भी अपने पुत्र सम्भाजी के साथ औरंगजेब को सजदा करने के लिए मुगल दरबार में जाना होगा।

शिवाजी – जयसिंह जी! वो औरंगजेब जो अपने भाइयों और पिता का सगा नहीं हुआ वो आपका क्या होगा? इस मुल्क को गजवा–ए–हिन्द करने के लिए वह हम दो हिन्दू शेरों को आपस में लड़ा रहा है।

जयसिंह – शिवाजी महाराज! ये बाल धूप में सफेद नहीं हुए। मुझे कूटनीति न सिखाइये।

सहायक मराठा सरदार (उत्तेजित होकर)– लेकिन हमारे शिवाजी महाराज की रक्षा का वचन कौन देगा?

कीरत सिंह – मैं मिर्जा राजा जयसिंह का पुत्र कीरत सिंह आपको लिखित रूप में वचन देता हूँ कि मैं और दिल्ली दरबार में मेरा भाई रामसिंह शिवाजी महाराज की पूरी रक्षा करेंगे और आपको सुरक्षित मराठवाड़ा वापस लायेंगे।

शिवाजी – एक राजपूत के वचन पर मुझे पूरा विश्वास है जयसिंह। लेकिन मेरा आपसे फिर आग्रह है कि यदि मुगल सत्ता के विरुद्ध मराठों और राजपूतों के हृदय मिल जाये तो इन मुगल आक्रान्ताओं को स्वदेश से बाहर निकालने के लिए हम मिलकर मौत की मजबूत दीवार को भी तोड़ सकते हैं, यतो धर्मः ततो जयः। जहाँ धर्म है वहीं विजय है। आइये, हमारा धर्म हमें पुकार रहा है कि हम विदेशी मुगलों के विरुद्ध एक साथ युद्ध करके हिन्दुत्व का गौरव बढ़ाये और युद्ध भूमि में रक्त की नदी बहाकर अपने पूर्वजों का तर्पण करें।

जयसिंह – राजपूत और गद्दारी! कैसी बातें करते हो शिवा! अब ये धर्म और अधर्म का रोना बंद कीजिए और जाइये अपने आगरा यात्रा का मुहूर्त निकलवाइये। उठाइये कलम, संधि पत्र पर हस्ताक्षर कीजिए। आज से आपकी रक्षा मेरे और मेरे पुत्रों के सर माथे पर।

(शिवाजी के चेहरे पर उलझन और विवशता के भाव)

(संधि पत्र पर दोनों के हस्ताक्षर और प्रस्थान)

दृश्य – दो

उद्घोषणा – छत्रपति शिवाजी को कड़ी नजरबंदी में अपने पुत्र सम्भाजी, पाँच बड़े सामन्त और सौ मराठा सैनिकों के साथ आगरा लाया गया। लगभग दो माह में ८२५ किलोमीटर की यात्रा पूरी करके ११ मई १९६६ को शिवाजी मुलकचन्द की सराय आगरा पहुँचे। १२ मई को औरंगजेब का पचासवाँ जन्मदिवस था और इस दिन उन्हें औरंगजेब के दरबार में जाना था। आगरा के नूरगंज बाग में जयसिंह के ज्येष्ठ पुत्र रामसिंह ने उनका स्वागत किया।)

रामसिंह – मैं मिर्जा राजा जयसिंह का ज्येष्ठ पुत्र रामसिंह, आपका स्वागत करता हूँ (भेंट का आदान प्रदान)

शिवाजी – आपके दर्शन से हर्ष हुआ रामसिंह। मुझे दरबार में कब जाना है?

रामसिंह – वह शुभ दिन कल ही है। कल जहाँपनाह आलमगीर औरंगजेब अपने जीवन के पचास बसंत पूरे कर रहे हैं। आप सहित उनके मार्ग के सारे कांटे निकल चुके हैं। अत: वह अपनी पचासवीं सालगिरह बड़े जोशों–खरोश से मना रहे हैं। कल पहली बार शाहजहाँ के तख्ते–ताउस– मयूर सिंहासन पर बैठेंगे। वह प्रसन्नचित्त होंगे। अत: कल मिलना ही श्रेष्ठ होगा। आइए, विश्राम को चलें।

दृश्य – तीन

(दरबार की ऊँची आवाज) बा–अदब, बा–मुलाहिजा होशियार। नूर–ए–मुगलिया सल्तनत, कुव्वते इस्लाम, बादशाहे हिन्दुस्तान, जहाँपनाह आलमगीर औरंगजेब जलवा फरोज हो रहे हैं।

सभी दरबारी सुल्ताने हिन्द, गुले हिन्दोस्तां जहाँपनाह को उनकी पचासवीं सालगिरह मुबारक हो। (चारों ओर से मुबारक हो)

औरंगजेब–)बन्द आँखों से माला फेरते हुए) अलहमदुलिल्लाह। आज हम बहुत खुश हैं, अब्बाजान नहीं रहे हमारे, भाईजान शुजा, मुराद और वो बुतपरस्त दारा शिकोह भी दोजख को भेज दिये गये हैं। राजपूत हमारी कदम–बोशी कर रहे हैं। कदम–दर–कदम हमारी हुकूमत दक्कन से अफगानिस्तान तक चल रही है। (हँसते हुए) और वह पहाड़ी चूहा शिवाजी भी आखिरकार पकड़ ही लिया गया। केवल पचास साल की उम्र में ही हमने हिन्दुस्तान की फतेह का ख्वाब पूरा कर लिया। (हँसी) हिन्दुस्तान को हमने दार अल–ए–इस्लाम बना दिया है।

एक दरबारी – हुजूर! खुदा की आप पर बड़ी मेहर है।

दूसरा – अजी, खुदा भी बहादुरी का साथ देता है।

तीसरा – हुजूर! हाजी भी हैं गाजी भी हैं। हुजूर की तलवार सारे काफिरों पर कयामत बनके टूट पड़ती है। जब तक चाँद, तारें और ये सारी कायनात सलामत है जहाँपनाह का जलवा बुलन्द रहे।

चौथा – अरे हुजूर! चाँद और तारों पर भी वह नूर कहाँ जो इस उम्र में भी आपके चेहरे पर है। आहा तख्ते ताउस, ताज पर जड़ा कोहिनूर हीरा, नीलम जड़ी शमशीर खुदा का नूर बरस रहा है नूर।

औरंगजेब – बहुत खूब–बहुत खूब दिवाने खास के हमारे इन वफादार जांबाजों को खिलाआत अता की जाए।

दरबान का प्रवेश – हुजूरेआला जहाँपनाह जान की मुआफी। वह काफिर, शिवाजी भोंसले, सिपहसालार रामसिंह के साथ दीवाने खास पहुँचा है। वह आपका दीदार करना चाहता है जहाँपनाह।

औरंगजेब– हुंह! पेश किया जाये। उस पहाड़ी चूहे शिवाजी को।

(शिवाजी का प्रवेश) (भेंट प्रस्तुत और अभिवादन)

औरंगजेब – इस मनसबदार को इसकी सही जगह पर खड़ा कर दिया जाये। क्यों फरीद बेग दक्षिण के क्या समाचार है?

फरीद बेग – हुजूर! हमारी फौजें बराबर फतेह हासिल कर रही हैं। राजा जयसिंह की रहनुमाई में हमने कोंडाना, रोहिणा, लौहगढ़ सहित तेइस दुर्ग जीत लिये हैं। कोकण और बीजापुर में लड़ाई अभी जारी है।

शिवाजी – (धीरे से) रामसिंह! क्या तुम मेरा अपमान करने मुझे यहाँ लाए हो? इस औरंगजेब में इतना गुरूर कि मेरा अभिवादन तक नहीं स्वीकार किया।

रामसिंह – शांति–शांति! शिवा यह दरबार है।

शिवाजी – यह कैसा दरबार है? यह तो मेरे अपमान का षडयंत्र है। मेरे लड़के सम्भाजी को पाँच हजारी मनसब दिया गया। और मुझे केवल तीन हजारी मनसबदारों में खड़ा कर दिया गया।

रामसिंह – शिवा! शांत हो जाए यह आगरा दरबार है। कहीं आपकी नाराजगी औरंगजेब के इन्तकाम का बहाना न बन जाए।

शिवाजी – (हाथ झटककर) शांत रहो राम सिंह! मेरा खून पानी थोड़े हो गया है।

(इशारा करके) अरे जिस कायर जसवन्त सिंह ने मेरे सैनिकों को पीठ दिखायी मुझे उसके भी पीछे खड़ा कर दिया गया।

औरंगजेब – (गरजकर) क्या इस पहाड़ी चूहे को मुगलिया दरबार के तौर तरीके सिखाने होंगे? खुदा कसम इसके सिर के लिए हमारी शमशीर खून की प्यासी हो रही है।

शिवाजी – (व्यंग से) जहाँपनाह अपने पिता को कैद में मारकर, भाइयों को कत्ल करके भी क्या आपकी खून की प्यास नहीं बुझी? कैसी है ये प्यास आपकी शमशीर की। अरे अपनी हिन्दू प्रजा का भीषण कत्लेआम करके भी आपकी शमशीर बेचैन है। धिक्कार है ऐसी बादशाहत पर।

औरंगजेब – (चिल्लाकर) खामोश क्या कुफ्र बकता है? अरे! तेरे जैसे काफिर का तो मैं सर कलम कर देता, खाल में भूसा भरवा देता। अगर मेरे राजपूत सिपहसालार राजा जयसिंह ने तेरी खैर–ख्वाही का कौल न दिया होता।

शिवाजी – काफिर कौन है? इसका फैसला तो इतिहास करेगा जहाँपनाह! अपने देश के लिए मर मिटने वाले काफिर नहीं कहलाते? शहीद कहलाते हैं। हिन्दुत्व का घोष अभी इतना कमजोर नहीं हुआ है कि राजमहलों में बैठे सनकी बादशाहों को उसकी आवाज भी न सुनाई पड़े। जिस दिन भगवा झण्डे के नीचे हिन्दू एक साथ होकर खड़े हो गए वही दिन

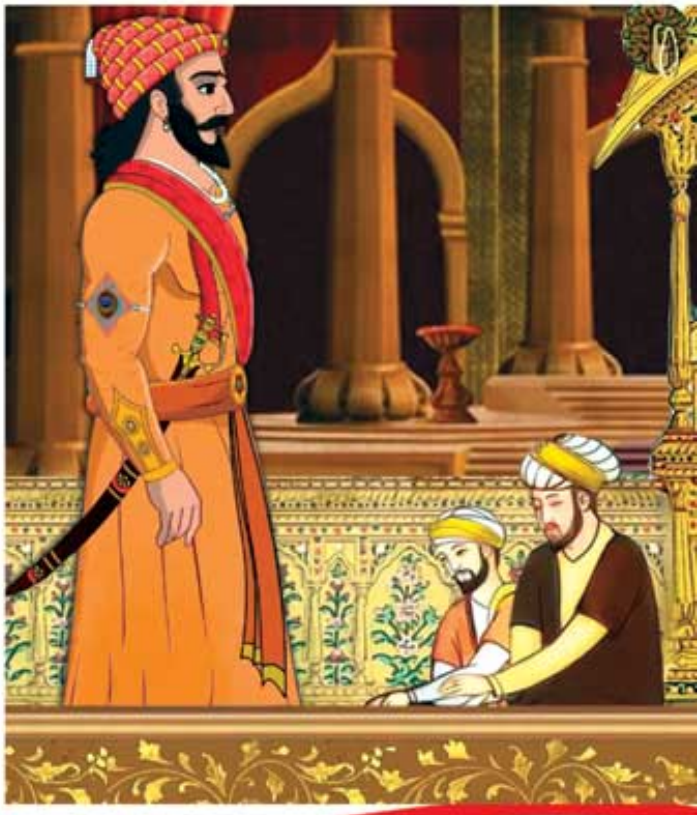

आपकी कयामत का दिन होगा। और सजा-ए-मौत की धमकी किसको देते हैं श्रीमान? हम हिन्दु तो पुनर्जन्म को मानते हैं। अरे! आत्मा तो केवल काया का चोला बदलती है। माँ भवानी यदि एक शिवा शहीद हुआ तो इस देश की माटी से सैकड़ों शिवा जन्म लेंगे।

हमको अपने पुरखों के वतन की रक्षा का हक है। हमारे खेत हमारे खलिहान, हमारे खण्डित देवालय, हमारे शिक्षालय, हमारी भाषा, हमारी संस्कृति, हमारी गाय, हमारी गंगा, हमारी माटी, हमारा धर्म, हमें स्वतंत्रता के लिए पुकार रहे हैं। अरे! आप एक पाक मुसलमां हैं तो खुदा का खौफ कीजिए। आने दीजिए मस्जिदों से अजान की, मंदिरों से घण्टियों की आवाजें एक साथ।

अरे! आपके पितामह अकबर ने सुलहकुल की नीति अपनाकर हिन्दुस्तान के हिन्दू-मुसलमां को एक कर दिया और आप नफरत का दरिया बहा रहे हैं। ये दरबारी आपके गीत गा सकते हैं। परन्तु आने वाला इतिहास आपको एक क्रूर, धर्मान्ध और बे-इन्साफ

बादशाह के रूप में ही याद करेगा। याद रखियेगा गरीब और प्रताड़ित प्रजा की बद्दुआएँ इस मुगलिया सल्तनत का नामो निशान मिटा देगी।

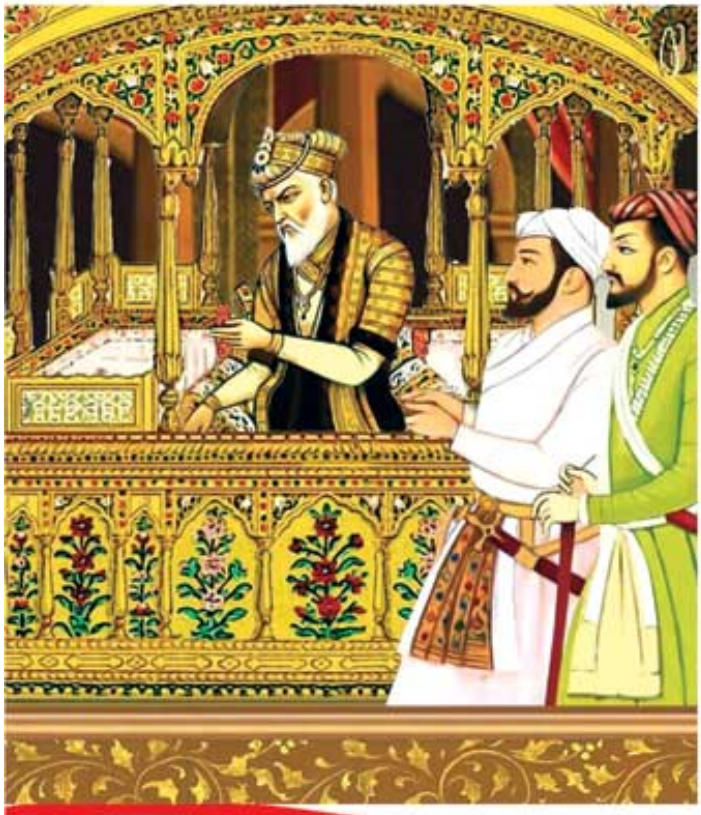

औरंगजेब – (दरबारियों से) ओहो! इस चूहे की तो जुबान भी इसकी तलवार की तरह चलती है। देखा! ये नापाक परिंदा पिंजड़े में कैसे फड़फड़ा रहा है। रस्सी जल गयी पर बल नहीं गए।

औरंगजेब – (क्रोध में) बदजुबान! बदतमीज! तू अपनी हद से पार जा रहा है। मेरा सब्र कहीं तेरी बर्बादी के जुनून में न बदल जाए। इंम्तहा न लो हमारे सब्र का। बुरा हाल करूँगा तेरा पूरा दक्षिण का सूबा इस्लाम के रंग में रंग दूँगा। हर एक को इस्लाम का पाबन्द बना दूँगा।

शिवाजी – अरे! मुझे तो हैरानी है आप इंसानियत का धर्म भी नहीं समझते? खुदा ने इंसान पैदा किया है या हिन्दू, मुसलमान? अरे! क्या मस्जिद पर बैठा परिंदा मुसलमान होगा और मंदिर पर बैठा हिन्दू? क्या जिस्मानी खून को भी हिन्दू-मुसलमां के दायरे में बांटा जा सकता है। अरे! आप एक सच्चे मुसलमां तो क्या एक सच्चे इंसान भी नहीं हैं।

औरंगजेब – (गरजकर) रामसिंह! ले जाओ इस जलील इंसान को हमारी नजरों के सामने से। तुम्हारे अब्बाजान के कौल पर मैं इसकी जां बख्श रहा हूँ। दौलतबेग-दक्कन से जयसिंह को तुरंत वापस बुलाओ। उनसे ही इसके कत्ल पर गुफ्तगू करूँगा। तब तक इसे सलाखों के पीछे ऐसा नजर बंद कर दो कि हवा भी वहाँ रुख करने से डरे।

दृश्य – चार

(औरंगजेब का दरबार)

औरंगजेब – शहबाज खान हम क्या करें? वो

काफिर शिवाजी अभी जिन्दा है। अगर हम उसको मार देंगे तो जयसिंह के साथ पूरा राजपूताना भी बगावत कर देगा। तरकीब निकालो। खत्म कर दो उसे! जमींदोज कर दो।

अली कुली खाँ – हुजूर उसे मुगल सेना के साथ अफगानिस्तान की मुहीम पर भेज दीजिए और मैदाने जंग में ही साजिश करके उसे कत्ल करवा दिया जाए। खून के दरिया में एक खून पता भी नहीं चलेगा।

औरंगजेब – (दाद देते हुए) बहुत खूब–बहुत खूब अली कुली खाँ। दीवारों के भी कान होते हैं। चलिए हवा महल चलते हैं वहीं पर इस साजिश को रंग चढ़ायेंगे।

(नेपथ्य से उद्घोषणा) – परन्तु शिवाजी भी उड़ती चिड़िया पहचानना खूब जानते थे। कूटनीति के माने हुए खिलाड़ी थे। उन्होंने मुगल फौजों के साथ अफगानिस्तान जाने का शाही फरमान ठुकरा दिया। उन्होंने औरंगजेब को गुजारिश भेजी कि वे राजपाठ छोड़कर संन्यासी बनकर काशी चले जायेंगे उन्हें मुक्त कर दिया जाये। पर शातिर औरंगजेब इस चाल से और भी सतर्क हो गया परिणाम स्वरूप शिवाजी के कैदखाने की पहरेदारों की संख्या बढ़ा दी गयी। इतिहास अब एक नई करवट ले रहा था। राष्ट्रीय नायक, वीर शिवाजी, उनके ज्येष्ठ पुत्र सम्भाजी और उनका सेवक हीरोजी फर्जन्द अब औरंगजेब के कैदी थे।

शिवाजी – (परेशान से टहलते हुए) उफ! क्या अब मुझे जिंदगी भर इन सलाखों के पीछे ही रहना होगा। उफ! क्या मेरे भाग्य में अब जेल की हवा में सांस लेना ही बदा है। क्या हिन्दवी स्वराज का सपना, सपना ही रह जायेगा? नहीं यह नहीं हो सकता। मुझे तो अभी स्वराज के संकल्प को पूरा करना है। माँ भवानी, गुरु रामदास, माता जीजाबाई को दिया वचन निभाना है। हिन्दुत्व की जिस मशाल को मैंने जलाया है उसे ऐसे ही नहीं बुझने दूँगा। मुझे यहाँ से निकलना ही होगा। नहीं! नहीं! शिवाजी इतना कमजोर नहीं कि वह इस जेल की दीवार से भी न निकल सकें। हिन्दवी स्वराज की स्थापना के लिए तो मैं माँ भवानी के चरणों में अपना शीश भी चढ़ा सकता हूँ।

(कुछ सोच कर) हाँ ऐसा हो सकता है?

हीरोजी मुझे ज्वर अनुभव हो रहा है। माथे में दर्द है (कांखते हुए) पूरे बदन में बुखार जैसा दर्द हो रहा है। जरा किसी वैद्य को बुलवाओ।

हीरोजी – पहरेदार! जल्दी से जल्दी वैद्य को बुलवाइये। महाराज अस्वस्थ हो गए हैं।

(शिवाजी की पीड़ा के स्वर) पर्दा गिर जायेगा।

उद्घोषणा – समय बीतता गया और समय के साथ–साथ शिवाजी का स्वास्थ्य भी गिरता गया। वैद्यों ने उन्हें गम्भीर रोग का रोगी बताया। (नेपथ्य से शिवाजी के कराहने की आवाजें और औरंगजेब का ठहाका– क्या कह रहे हो? क्या बताया? वह पहाड़ी चूहा बहुत बीमार है? बड़ी खुशी की खबर है। जाने दो

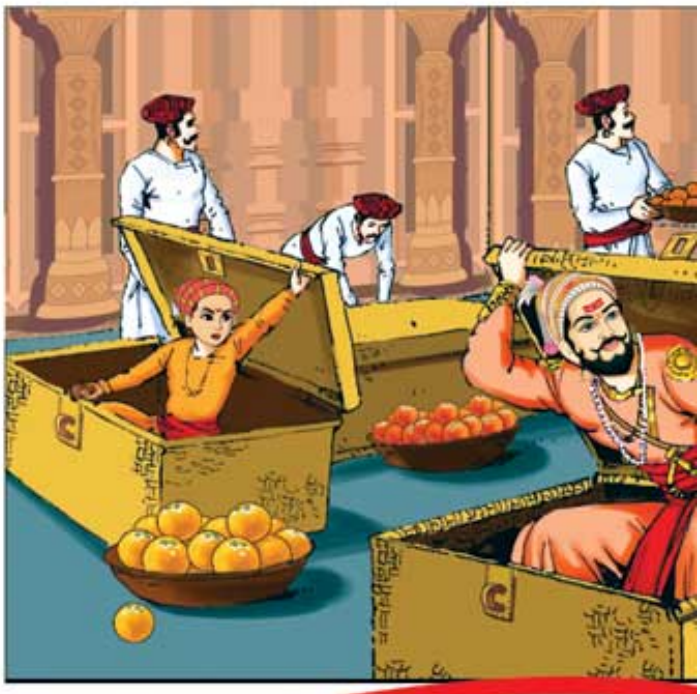

उसे अपने आप मौत के आगोश में। कम्बख्त को जहन्नुम नसीब होगा। शिवाजी करहाते हुए हीरोजी लगता है मृत्यु बहुत निकट है रामसिंह को बुलाओ।)

पाँच – दृश्य

(जेल का)

शिवाजी – रामसिंह मैं! अपनी मृत्यु के समीप हूँ। मुझे मेरे जीवन का अंत दिखाई पड़ रहा है। मैं चाहता हूँ कुछ दान पुण्य करके अपना परलोक सुधारूँ। मुझे एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ उधार दे दो ताकि अधिक से अधिक दान कर सकूँ। मुझे अपने जहाँपनाह से दान पुण्य करने की अनुमति दिलाओ। मेरी ओर से उनसे प्रार्थना करो कि शिवाजी इस दुनिया से विदा हो रहा है जीने नहीं दिया तो शांति से मरने की अनुमति तो दे दें।

रामसिंह – महाराज! मैं समझ नहीं पा रहा आपका उत्तम से उत्तम उपचार चल रहा है आपके बिना मैं पिताजी को क्या मुँह दिखाऊँगा? मैं अवश्य जहाँपनाह से प्रार्थना करता हूँ।

(औरंगजेब नेपथ्य से) – क्या बताया रामसिंह! शिवाजी खैरात बांटना चाहता है? वह दम

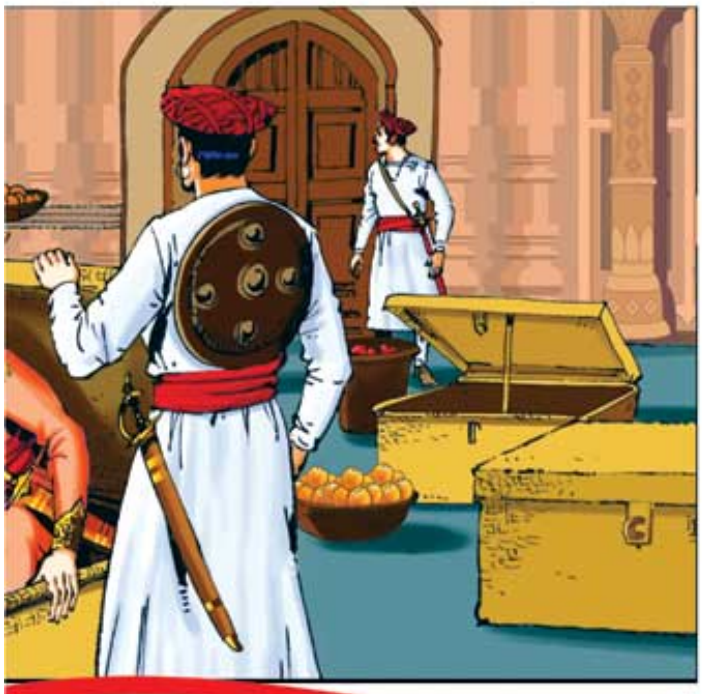

तोड़ने वाला है? ठीक है उसको दान–पुण्य करने की खैरात बाँटने की इजाजत देता हूँ। और अब सिलसिला शुरु हो गया दान–दक्षिणा का। फलों और मिठाई से भरी टोकरियाँ शिवाजी के छूने के बाद गरीबों में, ब्राह्मणों में बाँटी जाने लगी।

औरंगजेब इस खास दुश्मन की रोज खास खबर ले रहा था। सुरक्षा की दृष्टि से उसने १४ अगस्त १६६६ को आदेश दिया कि एक सप्ताह के अंदर शिवाजी की नजरबंदी का स्थान बदल दिया जाये उसे फिदाई हुसैन की हवेली से हटाकर विठ्ठलदास की हवेली में रख दिया जाये।

यह खबर शिवाजी तक पहुँची। अब शिवाजी के पास समय बहुत कम था। लोहा अब लगभग गर्म था, शिवाजी के पास भागते समय मार्ग में रिश्वत, खर्च और रक्षा के लिए रामसिंह द्वारा उधार दिये गये एक हजार सोने के सिक्के भी थे। बस प्रहार बाकी था। और वह प्रहार शिवाजी ने शीघ्र ही किया।

दृश्य – छः

दिनांक – १८ अगस्त १६६६, स्थान– फिदाई हुसैन की हवेली आगरा समय– प्रातः साढ़े सात बजे।)

शिवाजी – जल्दी करो सम्भाजी। इस टोकरे में बैठो मैं ऊपर से फल और मिठाई डालता हूँ। (गले लगाते हुए) हीरोजी मुझे तुम पर गर्व है। हिन्दवी स्वराज सदा तुम्हारे बलिदान का ऋणी रहेगा। अब तुमसे शायद अगले जनम में भेंट हो। नीचे फर्श पर जहाँ तुम सोते हो जल्दी से तकिया, गद्दा गोल करके चादर ओढ़ा दो ताकि पहरेदारों को तुम सोते हुए लगो। जल्दी मुझे भी टोकरे में फल और मिठाइयों से ढंक दो। और सुनो! यह लो मेरी अँगूठी इसे अपने हाथ में पहनकर चादर ओढ़कर, अँगूठी वाला हाथ बाहर

निकालकर मेरे पलंग पर लेट जाओ। अब तुम ही शिवाजी हो, माँ भवानी रक्षा करे।

पहरेदार – (एक–दूसरे से) अरे बुन्दाखाँ! आज तो शिवाजी महाराज बहुत देर तक सो रहे हैं लगता है तबीयत ज्यादा खराब है। दोपहर हो गयी क्या जगा दूँ? सम्भाजी भी बड़ी देर से गुसलखाने में है। कुछ धोखा तो नहीं।

बुन्दाखाँ – (हँसते हुए) अरे! शिवाजी तो खुद ही जिन्दा लाश बन गया है लाशें भागती थोड़े ही हैं? वो देखो उसके हाथ की अँगूठी दिखाई पड़ रही है। देखो फर्श पर रात भर का जगा हीरोजी भी सो रहा है। पर फिर भी उसको आवाज लगाता हूँ कहीं ये शिवाजी मर तो नहीं गया। आवाज लगाता है– हीरोजी फर्ज..... चीख पुकार, हंगामा, भगदड़, डाँट–फटकार। अरे! कोई जल्दी बादशाह को खबर करो हाय अल्लाह! अगर वो नहीं मिला तो हम सबका कत्लेआम हो जायेगा। सभी दिशाओं में घोड़े दौड़ा दो सभी चौकियाँ दुरुस्त कर दो हर जगह मुनादी करा दो ग्वालियर जाने वाले रास्ते को जाम कर दो जल्दी करो रास्ते में जो भी बाप–बेटा चलता दिखाई दे पकड़ लो चप्पे–चप्पे पर जासूस लगा दो। जहाँ मिले बेरहमी से कत्ल कर दो।

दृश्य – सात

(औरंगजेब का दरबार)

औरंगजेब – क्या बकते हो? शिवाजी, वह पहाड़ी चूहा भाग गया। कम्बख्तों नामाकूलों तुम सब के होते हुए वह चिड़िया पिंजरे से उड़ गयी। घेर लो। दक्कन के सारे रास्ते की नाकाबंदी कर लो। चप्पे–चप्पे की तलाशी लो।

उसे पकड़ना ही होगा मक्कारों कहाँ थे पहरेदार? कहाँ थी हमारी फौज और सिपहसालार। हर रास्ते पर घोड़े दौड़ा दो। अरे! हमारे खुफिया क्या कर रहे थे। अगर वह पहाड़ी नहीं पकड़ा गया तो अल्लाह की कसम न सिर्फ तुम्हारा बल्कि तुम्हारे सारे सिपहसालारों का सर कलम करवा देंगे। दफा हो जाओ मेरी नजरों से। हाय! आखिर चिड़िया उड़ ही गयी। कितने बदनसीब हैं हम।

उद्घोषणा – औरंगजेब वाकई बदनसीब था। वह चिड़िया ऐसी उड़ी कि फिर कभी पकड़ में ना आई। चालाक शिवाजी गेरुए वस्त्र पहनकर, सिर के बाल और मूँछ–दाढ़ी मुंडवा कर स्वयं साधुवेश में और सम्भाजी को शिष्य वेश में, महाराष्ट्र जाने के मार्ग आगरा से पश्चिम में ग्वालियर की ओर न जाकर पूर्व में मथुरा की ओर बढ़े। उन्होंने अपनी लाठियों को खोखला करके उसमें स्वर्ण मुद्रा और हीरे भर दिये। दुर्भाग्य से वे आगरा–मथुरा मार्ग पर एक जासूस द्वारा पहचान लिये गये। परन्तु मोटी रिश्वत देकर वे छूटने में सफल हो गये।

पिता – पुत्र पहचान न लिए जायें इसलिए मथुरा में महाविद्या देवी के मंदिर में सम्भाजी को मराठा पुरोहित के संरक्षण में छोड़ दिया। छत्रपति शिवाजी मथुरा, प्रयागराज, बनारस, गया, जगन्नाथपुरी, गौडवाना और गोलकुण्डा होते हुए दो हजार किलोमीटर से अधिक साधु वेश में गोपनीय

यात्रा करते हुए, मार्ग में पड़ने वाले सभी धार्मिक स्थानों पर धार्मिक कर्मकाण्ड करते हुए सितम्बर के अंत तक अपनी राजधानी रायगढ़ पहुँचे। मार्ग में मिलने वाले उनके साथी तीन दलों में विभक्त होकर साधु मण्डली के रूप में शिवाजी को सुरक्षा कवच देकर महाराष्ट्र की ओर बढ़ते रहे। और २९ सितम्बर १६६६ की सुबह माता जीजाबाई अभी पूजा करके उठी ही हैं कि....

दृश्य – आठ

सेवक – माता को प्रणाम! माँ वाराणसी से कुछ साधु बाबा आपके दर्शन करने पधारे हैं।

माता – उन्हें प्रतीक्षा करने को कहो। मैं उनसे कुछ देर के बाद मिलूँगी।

सेवक – नहीं माता उनका आग्रह है कि पूजा समाप्त होते ही उन्हें माता से मिलना है।

माता – ऐसा है तो उन्हें शीघ्र भेजो।

(साधुओं का प्रवेश) – अलख निरंजन, माँ जीजाबाई को प्रणाम! हम आपसे इतनी दूर से कुछ माँगने आये हैं। सुना है पूजा के बाद आपसे जो माँगों वह अवश्य मिल जाता है।

जीजाबाई – अपने पुत्र के वियोग से दुखी मैं आपको क्या दे सकती हूँ।

साधु – माता! हम विधर्मियों द्वारा अपने धर्म पर हो रहे अत्याचार से बहुत दुखी हैं अत: हम आपसे

दुर्ग रायगढ़ महाराष्ट्र

हिन्दवी स्वराज माँगते हैं। बोलो माँ दोगी ना?

जीजाबाई – हाँ हाँ! क्यों नहीं, मेरे पुत्र का संघर्ष व्यर्थ नहीं जायेगा, हिन्दवी स्वराज तो एक दिन अवश्य ही आयेगा।

साधु – अलख निरंजन! माँ हम काशी के वासी हैं, भोले बाबा के भक्त हैं वो आशुतोष हैं। हम अर्जी लगायेंगे, उनसे जो भी माँगना है, माँग लो। भक्तों की कामना तुरंत पूरी करते हैं।

जीजाबाई – तो उनसे मेरी विनती कहिये कि मेरा पुत्र, मेरा प्रतापी पुत्र जल्दी मेरी आँखों के सामने आ जाये।

साधु – अलख निरंजन! बस माँ इतनी सी विनती तो ये लो (शिवाजी अपने वेश में आ जाते हैं माँ के चरण छूते हैं सैनिक भी वेश बदल लेते हैं शिवाजी जीजाबाई गले मिलकर रोते हैं।)

मराठा सैनिक नारा लगाते हैं – शिवाजी महाराज की जय, माता जीजाबाई की जय, माँ भवानी की जय, हिन्दवी स्वराज की जय।

एक सैनिक – अरे! आला रे आला, कौन आला?

सभी सैनिक – (हँसते हुए) शिवाजी आला रे, शिवाजी आला रे!

उद्घोषणा – आज हम स्वतंत्र हैं, हमारा अपना राज, स्वराज है, तिरंगे में केसरिया रंग शान से लहरा रहा है। आज का शुभ दिन शिवाजी के प्रयासों का परिणाम है। उन्हीं के प्रताप का प्रतिफल है। हिन्द स्वराज का संकल्प फूँकने वाले वीर नायक छत्रपति शिवाजी महाराज को हम कभी नहीं भूलेंगे।

जय भवानी! जय शिवाजी!

– मथुरा (उ. प्र.)

अमूल्य गुरुमंत्र

– सौ. पद्मा चौगांवकर

कालखण्ड – ई. सन् १६७१ के लगभग

स्थान – महाराष्ट्र के रायगढ़ के महल में भव्य बैठक कक्ष।

पात्र

१) शिवाजी महाराज– आयु ४० वर्ष लगभग, राजसी वेषभूषा।

२) जीजाबाई (आई साहेब)– सौम्य राजसी वेष।

३) सरदार, पदाधिकारी, किल्लेदार।

४) समर्थ रामदास स्वामी – संत की वेषभूषा।

५) स्वामी के दो शिष्य।

६) शिवाजी का एक सेवक।

७) एक दासी।

८) दो द्वारपाल।

दृश्य – एक

दीवान पर मसनद, गांव–तकिये, लोढ़ आदि पास ही कुछ आसन, सुसज्जित कक्ष।

मसनद पर शिवाजी राजे विराजमान, आसनों पर तीन सरदार बैठे हुए। द्वार पर दो द्वारपाल खड़े हुए।)

एक सरदार – (उठकर खड़े होकर) महाराज! रायगढ़ का इमारती कार्य पूर्ण हुआ। इसके अलावा अन्य खर्च का ब्यौरा इस प्रकार है– (कुछ कागजात महाराज को देते हुए) दोनों शाही दरबारों के अतिरिक्त, कचहरी, सैनिकों – राज्य कर्मचारियों के रहवास, और शस्त्र–गोदाम, सभी इमारतें भी लगभग पूर्णता की ओर हैं।

शिवाजी महाराज – (कागज लेते हुए) और बुर्जों, देवस्थानों और मठों की मरम्मत का काम? साधु–संतों, सैन्य–परिवारों, गरीब और गौशालाओं पर होने वाला खर्च...?

सरदार पदाधिकारी – (उठकर खड़े होकर) जी महाराज! आपकी आज्ञानुसार, इन सभी मदों पर खर्च करने के लिए, निश्चित धनराशि वितरित कर दी गयी है। काम व्यवस्थित चल रहा है।

शिवाजी – हमें अपने मुलाजिमों पर पूर्ण विश्वास है। काम व्यवस्थित चले, प्रजा संतुष्ट रहे, हमारा राज्य रामराज्य–सा हो, यही इच्छा हम रखते हैं। ये सारे कागजात पंत को दिये जाए। (कागज वापस देते हुए।)

दूसरा सरदार – महाराज! निश्चिंत रहें। आपका शब्द हमारे लिए ईश्वर की आज्ञा है।

शिवाजी – ये सभी सूचनाएँ हम आईसाहेब

को देना चाहेंगे।

(तीनों सरदार मुजरा करते हुए प्रस्थान कर जाते हैं, द्वारपाल वाले द्वार से।)

(दूसरे द्वार से आईसाहेब जीजाबाई का प्रवेश। साथ में एक दासी उन्हें सहारा देते हुए मसनद तक लाती है।)

शिवाजी – (आईसाहेब के चरणों में झुककर) प्रणाम आईसाहेब!

आईसाहेब – (आशीर्वाद देते हुए) सुखी रहो शिवबा! धर्मरक्षा, राज्यरक्षा, अपने रायगढ़ को तो आपने सुसज्जित कर लिया है।

शिवाजी – जी आईसाहेब! परन्तु गढ़ पर अभी कई इमारतें निर्माणाधीन हैं।

आईसाहेब – शिवबा! हम सब कुछ देख रहे हैं– विजित दुर्गों की देखभाल, सुरक्षा और मरम्मत; नये दुर्ग मुगलशाही से छीनना! इस सबके लिए अपने मावळे साथियों के साथ आप दिन–रात जूझते रहे हैं।

फिर रैयत की भी चिंता करते हैं आप! कभी अपने आपके लिए नहीं सोचते!! आपको विश्राम की आवश्यकता है!

शिवाजी – आपका और माँ भवानी का आशीर्वाद, सच्चे साथियों का संबल, प्रजाजन का प्यार हमें ऊर्जा देता है। थकान कहाँ होती है आईसाहेब!

आईसाहेब – ठीक है शिवबा! फिर भी हम चाहेंगे आप कुछ दिन आराम करें। अपने गुरु श्री समर्थ रामदासजी की सेवा में जाएँ। उनके आशीष लें। उनके सान्निध्य में नई ऊर्जा मिलेगी आपको।

शिवाजी – माँ साहेब! इस बात से याद आया, सुबह एक संदेश वाहक गुरुजी का पत्र लेकर आया था। उनके द्वारा चाफलगढ़ में, देवस्थान पर उत्सव होना है। हम वहाँ जाना चाहेंगे। आपकी आज्ञा और इच्छा भी पूरी होगी। शिंगणवाड़ी में रुकना होगा। गुरुजी का सान्निध्य और आशीष, सहज ही शांति और आनंद की प्राप्ति होगी।

आईसाहेब – यह तो और भी अच्छा हुआ! शिवबा, क्या आपको याद है, श्री समर्थ रामदासजी ने आपको एक थाल में सजाकर कुछ वस्तुएँ भेंट दी थीं?

शिवाजी – जी आईसाहेब! हमें याद है। उन वस्तुओं को देखकर सभी विस्मित थे। आप ही ने हमें उस अनोखी भेंट का गूढ़ अर्थ समझाया था। एक था नारियल शुभ चिह्न, दूसरी एक मुट्ठी मिट्टी जो प्रतीक है मातृभूमि और स्वराज्य–विस्तार की, तीसरे छोटे–बड़े पत्थर–कंकर, जिनसे अर्थ निकलता था जीते हुए प्रदेशों में मजबूत किलों का निर्माण करना होगा। और चौथी विचित्र भेंट थी, घोड़े की लीद।

आईसाहेब – हाँ! यहाँ गुरुजी का संकेत था, अश्व शक्ति की ओर। शिवबा, आपने उनकी अनोखी भेंट का महत्व जीवन में खूब समझा! अश्वशक्ति के

बल पर, छापामार युद्ध नीति से, यवनों से टकराकर राज्य-विस्तार किया, दुर्गों की सुरक्षा के लिए बुर्जों का निर्माण किया।

शिवाजी – आपके मार्गदर्शन और माँ भवानी के आशीष बिना क्या कुछ संभव था, माँ साहेब!

आईसाहेब – शिवबा! अब हम विश्राम करेंगे। आप जल्दी ही यात्रा की तैयारी करें।

शिवाजी – जी आईसाहेब!

(शिवाजी आईसाहेब को सहारा देकर अंदर ले जाते हैं।)

दृश्य – दो

(श्री समर्थ रामदास स्वामी का मठ, सुंदर, प्राकृतिक वातावरण, आसन पर गुरु विराजमान।)

(एक सेवक और दो शिष्यों के साथ शिवाजी का आगमन।)

शिवाजी – (गुरु के पाद स्पर्श करने हुए) प्रणाम गुरुदेव! अहोभाग्य। आपके दर्शन से हम धन्य हुए।

रामदास स्वामी – आओ, शिवाजी राजे! आओ। हमें आपकी ही प्रतीक्षा थी। (सेवक थाल में पूजा सामग्री प्रस्तुत करता है।)

(शिवाजी पवित्र जल से गुरुपाद पूजा कर वंदन करते हैं। गुरुजी मस्तक पर हाथ रख आशीष देते हैं। शिवाजी एक थाल में सुवर्ण मुद्राएँ और दूसरे में वस्त्र आदि भेंट करते हैं–)

रामदास स्वामी – राजे! दान राशि पहले ही तो भेज दी है।

शिवाजी – यह भेंट धार्मिक उत्सव के लिए। देव-स्थापना से हमें आनंद की अनुभूति होगी। उत्सव धूम-धाम से मनाया जाए। गुरुदेव! इस भेंट में हमें 'गुरुदीक्षा' भी चाहिये और राजनैतिक मार्गदर्शन भी।

समर्थ रामदास जी – अवश्य राजे! दोनों में कोई अंतर नहीं है। 'दिशादर्शन' ही 'दीक्षा' है। यह लो तुलसीपत्र इसे हाथ में रखकर ध्यान से राजमंत्र सुनो – ''शिवाजी राजे! जो शासक, सतर्क बुद्धि पूर्वक शासन करता है, राज्य के प्रति अपना धर्म समझकर कार्य करता है वह निश्चित ही सफल होता है। इंसान की पहचान सही रूप से करना उसे आना चाहिये।

न्याय की सीमाओं का कभी उल्लंघन न हो। कोई बड़ा निर्णय लेने में जल्दबाजी ठीक नहीं।

सैन्य में छोटा से छोटा कर्मचारी भी महत्वपूर्ण है– उसकी कद्र करो। हथियारों का निर्माण और उचित रखरखाव सेना को बल देता है। राजा और प्रजा का एकमत होना सुशासन का मूलमंत्र है। शिवाजी राजे! आप एक कठोर और जिद्दी क्रांतिकारी हो। इसलिए सर्वत्र सफल होकर सुराज की स्थापना, स्वधर्म रक्षा करने में सक्षम हो। आपके कर्म अन्याय

विरुद्ध हैं। इसलिए माँ भवानी और जन–जन के चहेते हैं।''

शिवाजी – गुरुदेव! आपने अमूल्य अमृत तुल्य वचनों के साथ हमारा मार्गदर्शन किया। वे हमारे हृदय और मस्तक में हमेशा अंकित रहेंगे। 'दीक्षा स्वरूप'।

गुरु रामदास जी – माँ भवानी का आशीष आपको सदैव मिले।

शिवाजी – (तुलसी पत्र अपने माथे से स्पर्श करते हैं।) गुरु को नमन कर कहते हैं– गुरुदेव, अब गुरु दक्षिणा स्वीकार करने की कृपा करें।

(शिवाजी सेवक के थाल से सुवर्ण–पत्रक लेकर गुरु को अर्पित करते हैं, जिसमें लिखे लेख में, वे गुरु को अपना समस्त साम्राज्य और धन संपदा का स्वामित्व दे देते हैं।)

(उस लेख को स्वामी पढ़ते हुए गंभीर हो जाते हैं।)

स्वामी रामदास जी – शिवाजी राजे! यह मत भूलो, यह स्वराज और संपदा आपने प्रजा के हित में बनाई है। इसके लिए ईश्वर ने आपको चुना है। इसे अपना मानकर दान कर देना ठीक नहीं। हम भी इसे स्वीकार करने के अधिकारी नहीं।

शिवाजी – (विव्हल होकर) क्षमा! क्षमा गुरुदेव, क्षमा! सब कुछ सचमुच प्रजा का है, हमारा कुछ नहीं। फिर भी आप इसे स्वीकार करें।

रामदास स्वामी – शिवा राजे! हमने आपका दिल दुखाया, परंतु अब आपको प्रसन्न देखना चाहते हैं। आपका यह 'पत्रक' हम स्वीकार करते हैं।

किन्तु अब आपको आदेशित करते हुए, प्रजा की यह धरोहर, आपके सक्षम हाथों को सौंपते हैं।

''जय जय रघुवीर समर्थ।''

(शिवाजी पत्रक माथे से लगाकर कहते हैं– ''जय जय रघुवीर समर्थ''। शिवाजी गुरु चरणों में झुके हुए, गुरु समर्थ रामदास स्वामी उन्हें आशीष देते हुए...।)

(पर्दा गिरता है।)

– गंजबासौदा (म. प्र.)

जय का सुनिश्चय

आज फिर आवश्यकता है शिवा जैसे युवा की, कोण्डदेव जैसे वृद्धों की, जीजा सी माता और तान्हाजी और बाजी प्रभु जैसे सहयोगियों की। सन्त हों समर्थ रामदास जैसे, भक्त हों तुकाराम जैसे, पण्डित हो गंगा भट्ट सा और सबका लक्ष्य हो एक स्वराष्ट्र की उत्कृष्ट सेवा तो भारतमाता की जय तो सुनिश्चित होगी ही।

छत्रपति शिवाजी

– कुसुम अग्रवाल

पात्र–परिचय

१) छत्रपति शिवाजी।
२) तानाजी (शिवाजी का अंगरक्षक)।
३) बालक (सैनिक पुत्र)।
४) कुछ सैनिक।
५) दरबारीगण।

दृश्य – एक

(छत्रपति शिवाजी के शयनकक्ष का है। एक विशाल पलंग पर शिवाजी गहरी नींद सोए हुए हैं। कक्ष के चारों ओर सैनिकों का पहरा है तथा शिवाजी के अंगरक्षक तानाजी शिवाजी के सिरहाने तलवार लेकर पहरा दे रहे हैं। अचानक एक बालक हाथ में तलवार लेकर शयन कक्ष में प्रवेश करता है और शिवाजी के पलंग के पास पहुँच कर उन पर वार करने को तत्पर होता है।)

तानाजी – (बालक का हाथ पकड़कर एक ओर ले जाकर) ठहरो! यह क्या कर रहे हो? तुम कक्ष के अंदर कैसे आए? तुम्हारी इतनी हिम्मत कैसे हुई?

बालक – देख नहीं रहे? मैं सैनिकों की आँखों में धूल झोंककर यहाँ तक आया हूँ। हिम्मत की क्या कमी है मुझमें?

तानाजी – मानना पड़ेगा हिम्मत तो है। किन्तु प्रजा के दुलारे महाराज शिवाजी पर प्रहार? आखिर इसका कोई कारण तो होगा?

बालक – कोई भी काम बिना कारण के नहीं होता। पर तुम कौन हो कारण पूछने वाले? जाओ नहीं बताता। (तानाजी और बालक के वार्तालाप से शिवाजी की नींद खुल जाती है और वह पलंग पर उठकर बैठ जाते हैं।)

शिवाजी – (आश्चर्य से बालक की ओर देखकर) बालक, आधी रात को तुम मेरे कक्ष में क्या कर रहे हो? (फिर तानाजी की ओर देखकर) मैं हैरान हूँ यह यहाँ तक कैसे पहुँचा? आप सब क्या कर रहे थे?

तानाजी – महाराज! क्षमा कीजिए। यह बालक बहुत ही शातिर दिखता है। मैं तो कब से ही इस पर नजर रखे हुए था। यह सैनिकों की निगाहों से बचकर यहाँ तक तो पहुँच गया था परंतु मेरी दृष्टि इस पर पड़ ही गई थी।

शिवाजी – (हैरान होकर) फिर तुमने इसे इतना बड़ा कदम उठाने से पहले ही गिरफ्तार क्यों नहीं किया?

तानाजी – क्षमा कीजिएगा महाराज! मैं देखना चाहता था कि आखिर यह किस हद तक जाता है। किन्तु अब देख रहा हूँ यह तो चट्टान की तरह अडिग इरादा लेकर आया है।

शिवाजी – (हैरानी से) हाँ बहुत हिम्मत दिखाई है इस बालक ने। वह भी अपने महाराज को मारने के प्रयोजन के लिए। अवश्य इसके पीछे कोई

बड़ा कारण होगा। हमें वह जानना चाहिए।

तानाजी – अवश्य महाराज! (फिर बालक की ओर मुँह करके) बालक! क्या तुम्हें यहाँ तक आने में भय नहीं लगा? क्या तुम यह नहीं जानते थे कि पकड़े जाने पर तुम्हें मृत्यु दण्ड दिया जा सकता है।

बालक – जानता था, या तो अथाह धन या मृत्यु दण्ड।

शिवाजी – (हैरान होकर) अथाह धन? वह कैसे प्राप्त होता? भला मेरे मरने से धन की प्राप्ति कैसे और किससे हो सकती है?

बालक – उन्हीं द्वारा जिनके लिए आपके प्राण कीमती हों?

शिवाजी – यानी कि शत्रु? क्या कह रहे हो? मेरा शत्रु? कौन?

बालक – सुभागराय।

शिवाजी – (सोचने की मुद्रा में) सुभागराय? फिर तो सच कह रहे हो। वह तो सचमुच मेरे प्राणों का प्यासा है। क्या कहा उसने?

बालक – वह एक दिन आकर मुझसे मिला और बोला – यदि तुम शिवाजी को मार दो तो मैं तुम्हारा जीवन पर्यंत भरण–पोषण करता रहूँगा।

शिवाजी – भरण–पोषण? और तुम मान

गए? भला तुम्हें भरण–पोषण के लिए सहायता लेने की आवश्यकता क्यों पड़ गई?

बालक – क्योंकि मैं पितृहीन हूँ। मेरे पिताजी की युद्ध में मृत्यु हो चुकी है। वे आपके सैनिक थे। मेरी माँ बहुत बीमार है। घर में अन्न का एक दाना भी नहीं है। ऐसे में सहायता नहीं लूँ तो और क्या करूँ?

तानाजी – महाराज! धन के लोभ में यह बालक आपके प्राण लेना चाहता था। मेरा विचार है इसे रात भर कैदखाने में रखकर कल सुबह मृत्यु दण्ड दे देना चाहिए।

बालक – (तानाजी की ओर हाथ जोड़कर) मैं जानता हूँ मेरे अपराध का दण्ड मृत्युदण्ड है। और वह मुझे मिलना ही चाहिए परन्तु फिर भी मेरी एक विनंती है।

शिवाजी – कहो क्या चाहते हो?

बालक – महाराज! मेरी माँ बहुत बीमार है। उसे मेरे बारे में कुछ भी नहीं पता। यदि आप आज्ञा दे तो मैं मरने से पहले एक बार उससे मिल आऊँ। उससे मिलने के बाद मैं कल सुबह फिर आपके दरबार में उपस्थित हो जाऊँगा।

तानाजी – अरे वाह! एक और चतुराई। बहाना बनाकर यहाँ से भागना चाहते हो। भला एक बार छूटने के बाद कोई प्राण दण्ड पाने के लिए आता है? (कह कर जोर–जोर से हँसता है। बालक हाथ जोड़कर कभी शिवाजी की ओर देखता है तो कभी ताना जी की ओर)।

शिवाजी – (गंभीर मुद्रा में) तानाजी! इस बालक को जाने दिया जाए। यदि यह अपनी माँ से मिलकर आना चाहता है तो अवश्य मिलकर आए।

तानाजी – (आश्चर्य से) यदि महाराज इसे मृत्युदंड दिया जाना है। यह कल नहीं आया तो?

शिवाजी – निश्चिंत रहिए। यह अवश्य आएगा।

बालक – महाराज की जय हो। (कहकर चला जाता है।)

दृश्य – दो

(शिवाजी महाराज के दरबार का है। शिवाजी सिंहासन पर बैठे हैं। उनके पास में तानाजी खड़े हैं तथा चारों ओर दरबारी बैठे हैं। तभी उसी बालक का प्रवेश।)

बालक – महाराज की जय हो। देखिए मैं अपने वादे के अनुसार अपनी सजा पाने के लिए फिर हाजिर हूँ। (कहकर शिवाजी के चरणों में प्रणाम करता है।)

तानाजी – (हैरानी से शिवाजी की ओर देखकर) महाराज! घोर आश्चर्य! बालक प्राण दण्ड पाने के लिए फिर हाजिर हो गया है। मैंने ऐसा निडर बालक पहले कभी नहीं देखा।

सभी दरबारी – (सम्मिलित स्वर में) घोर आश्चर्य! घोर आश्चर्य! ऐसा पहले कभी नहीं देखा। यह बालक कुछ अति दृढ़ निश्चयी है।

शिवाजी – निसंदेह यह बालक वीर और स्वाभिमानी है और क्यों न हो? यह हमारे भूतपूर्व सैनिक का बेटा जो है। बालक हमारे पास आओ। (कहकर बालक को अपने पास बुलाते हैं और बालक शिवाजी के पास आता है।)

शिवाजी – बालक! हम तुम्हारे साहस और संकल्प से बहुत प्रभावित हुए। अत: हम तुम्हारा मृत्यु दण्ड क्षमा करते हैं।

सभी दरबारी – (सम्मिलित स्वर में) महाराज की जय हो। महाराज की जय हो। किन्तु इसने अपराध तो किया ही है?

तानाजी – महाराज! केवल सुबह प्राण दण्ड पाने के लिए वापिस हाजिर हो जाने से इसका अपराध कम नहीं हो जाता। अत: इसे क्षमा करना कहाँ तक उचित है। आप ऐसा क्यों कर रहे हैं?

शिवाजी – तानाजी! तुम नहीं जानते। बालक के अपराध करने से पहले अपराध हमसे हुआ है।

सभी दरबारी व तानाजी – (सम्मिलित स्वर में आश्चर्य से) आपसे? आप अपराध कर ही नहीं सकते। भला आपने क्या अपराध किया है?

शिवाजी – जानते हो यह हमारे भूतपूर्व सैनिक का बेटा है। और इसके घर में अन्न की कमी हो गई। इसी कारण यह बालक इस जघन्य अपराध करने को मजबूर हो गया। और यह सब इसलिए हुआ है क्योंकि हम युद्ध में माने जाने वाले सैनिकों के परिवार के भरण–पोषण की जिम्मेवारी नहीं लेते और उनको उन्हीं के हाल पर छोड़ देते हैं। यदि हमने उनका ध्यान रखा होता तो आज इस बालक को यह कदम उठाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

तानाजी – महाराज! आप धन्य हैं! सचमुच आप धीर, वीर और गंभीर हैं।

शिवाजी – आज से इस बालक को हमारे संरक्षण में रखा जाए तथा इसका और इसकी माँ के संपूर्ण भरण–पोषण की व्यवस्था की जाए। हाँ केवल इसके ही नहीं अपितु आज से हम उन सभी सैनिकों की परिवारों के भरण–पोषण की भी जिम्मेदारी लेते हैं जो युद्ध में मारे गए हैं या मारे जाएँगें।

तानाजी – महाराज! सचमुच आपने अपने विवेक से सही निर्णय लिया है। यह निर्णय लेकर आपने अपनी प्रजा पालक होने का पुख्ता सबूत दिया है। अत: मैं आपके चरणों में शीश नवाता हूँ। (कहकर महाराज के चरणों में गिर जाता है। सभी दरबारी और बालक मिलकर महाराज की जय–जयकार करते हैं।)

सभी – छत्रपति शिवाजी की जय। छत्रपति शिवाजी की जय।

(पर्दा गिरता है।)

– कांकरौली राजसमंद
(राजस्थान)

निराला वीर शिवा

– डॉ. सुधा जगदीश गुप्ता

पात्र – बोड़मदादा आयु लगभग ४० वर्ष, झुमरू, पायल, डब्बू, (तीनों कक्षा सातवीं आठवीं के छात्र) मक्खन भैया (बड़ा भाई)

दृश्य – मंच पर वीर शिवाजी की तस्वीर।

सामग्री – तलवार, शिवाजी की तस्वीर, टेबल कुर्सी।

दृश्य – एक

(झुमरू और डब्बू मंच पर गोरिल्ला बनकर कूद–कूदकर अजीब–अजीब शक्ल बनाकर तरह–तरह की आवाज निकालकर आपस में युद्ध कर रहे हैं।)

मक्खन भैया – (मंच पर प्रवेश करते हुए) ओफ्फ! यह क्या हो रहा है?

डब्बू – हम गोरिल्ला युद्ध कर रहे हैं।

मक्खन भैया – अरे मूर्ख! गोरिल्ला युद्ध का मतलब गोरिल्ला बनकर लड़ना नहीं होता।

झुमरू – तो फिर क्या होता है?

पायल – हाँ! मक्खन भैया हमने भी कहीं पढ़ा है कि शिवाजी गोरिल्ला युद्ध करते थे पर ये क्या होता है? मैं भी तो गोरिल्ला जानवर ही समझ रही थी।

झुमरू और डब्बू – (दोनों एक–दूसरे की तरफ देखते हुए) हाँ मक्खन भैया बताओ ना फिर क्या है यह गोरिल्ला युद्ध?

पायल – तुम दोनों तो पक्के गोरिल्ला लग रहे हो। बने रहो मूर्खों! ऐसे ही अच्छे लगते हो।

झुमरू – अधिक बुद्धिमान बनने की कोशिश ना करो पायल।

मक्खन भैया – अब आपस में ही युद्ध करने लगोगे क्या? एक काम करते हैं, बोड़म दादा के पास चलते हैं वह पूरी जानकारी अच्छे से बता सकते हैं।

डब्बू – लेकिन बोड़म का अर्थ क्या होता है?

झुमरू – जहाँ तक मुझे पता है बोड़म का अर्थ बुद्धू होता है।

डब्बू – तो फिर उनके पास चलने का क्या लाभ?

पायल – नाम से कुछ नहीं होता, काम से होता है।

डब्बू – आज कुछ अधिक ही होशियारी दिखा रही है पायल। क्यों झुमरू ठीक कहा न मैंने।

झुमरू – डब्बू, तुम पूरे डिब्बा हो इसीलिए तुम्हारा नाम डब्बू है।

पायल – (ताली बजाकर खूब हँसती है।) – यह हुई ना कोई बात, नहले पर दहला।

मक्खन दादा – पायल ने सही कहा

फकीरचंद नाम होता है पर वह बहुत अमीर होते हैं नाम घमंडी लाल होता है पर वह विनम्र होते हैं।

झुमरू – लेकिन बोड़म नाम तो बहुत ही अजीब लग रहा है यह तो नहीं रखना चाहिए।

मक्खन भैया – सुनो मेरे भाइयों! पुराने समय में जब कोई बच्चा इकलौता होता था या बहुत दिनों बाद मन्नत करने पर पैदा होता था तो किसी की बुरी नजर ना लगे इसलिए उल्टे-सुल्टे नाम रख देते थे। बोड़म दादा का नाम भी उनकी माँ ने बुरी नजर से बचने के लिए रख दिया होगा पर वे वाकई बहुत बुद्धिमान हैं उनके पास अनुभव और ज्ञान का भंडार है।

झुमरू – क्षमा चाहता हूँ मक्खन भैया! फिर देर किस बात की?

डब्बू और पायल – हाँ, हाँ! चलिए बोड़म दादा के पास चलें। उनसे बहुत से प्रश्न पूछना हैं।

दृश्य – दो

(बोड़म दादा मंच पर हाथ में समाचार-पत्र लिए कुर्सी टेबल पर पढ़ रहे हैं। पास ही वीर शिवाजी की तस्वीर लगी हुई है।)

(मक्खन भैया, पायल, डब्बू, झुमरू का मंच पर प्रवेश।)

सभी एक साथ – प्रणाम दादा प्रणाम!

बोड़म दादा – खुश रहो बच्चो! आओ, आज तुम लोगों का आना कैसे हुआ?

मक्खन भैया – हम बच्चों के मन में कुछ प्रश्न हैं। दादा! हम उसी के उत्तर जानने के लिए आपके पास आए हैं।

बोड़म दादा – पूछो बच्चो! (वह अपनी ऐनक उतारकर टेबल पर रखते हैं।)

डब्बू – दादा यह गोरिल्ला युद्ध क्या होता है?

बोड़म दादा – अच्छा! बहुत अच्छा प्रश्न किया तुम लोगों ने। आज मैं अखबार में उन्हीं के बारे में पढ़ रहा था। जिन्होंने इस युद्ध की नींव डाली थी।

पायल – कौन थे वे?

बोड़म दादा – (तस्वीर की तरफ संकेत करते हुए।) वे थे वीर शिवाजी।

झुमरू – वीर शिवाजी! जिनकी माँ का नाम जीजाबाई था।

डब्बू – हाँ हाँ! पिता का नाम शाहजी भोंसले था। मैंने भी सामान्य ज्ञान की पुस्तक में पढ़ा था।

मक्खन भैया – उनका जन्म १९ फरवरी १६३० पुणे शिवनेर दुर्ग में हुआ था।

झुमरू – मक्खन भैया! आपको तो के. बी.

सी. में जाना चाहिए।

झुमरू और डब्बू – हाँ सही बात है आपका सामान्य ज्ञान तो बहुत तगड़ा है।

बोड़म दादा – हाँ! बिल्कुल सही याद है तुम लोगों को। उन्होंने ही गोरिल्ला युद्ध शुरू किया था। इसे छापामार युद्ध भी कहते हैं।

पायल – कई बार सुनने में आता है किसी के घर में छापा पड़ा है, इतनी रकम पकड़ी गई क्या इस तरह?

बोड़म दादा – छापा पड़ता है यानी अचानक बिना बताए खुफिया विभाग कुछ जानकारी मिलने पर अपराधी को पकड़ते हैं। ठीक इसी तरह छापामार युद्ध में शत्रु पर चुपचाप अचानक हमला करके कमजोर कर दिया जाता है। शत्रु को भागने या

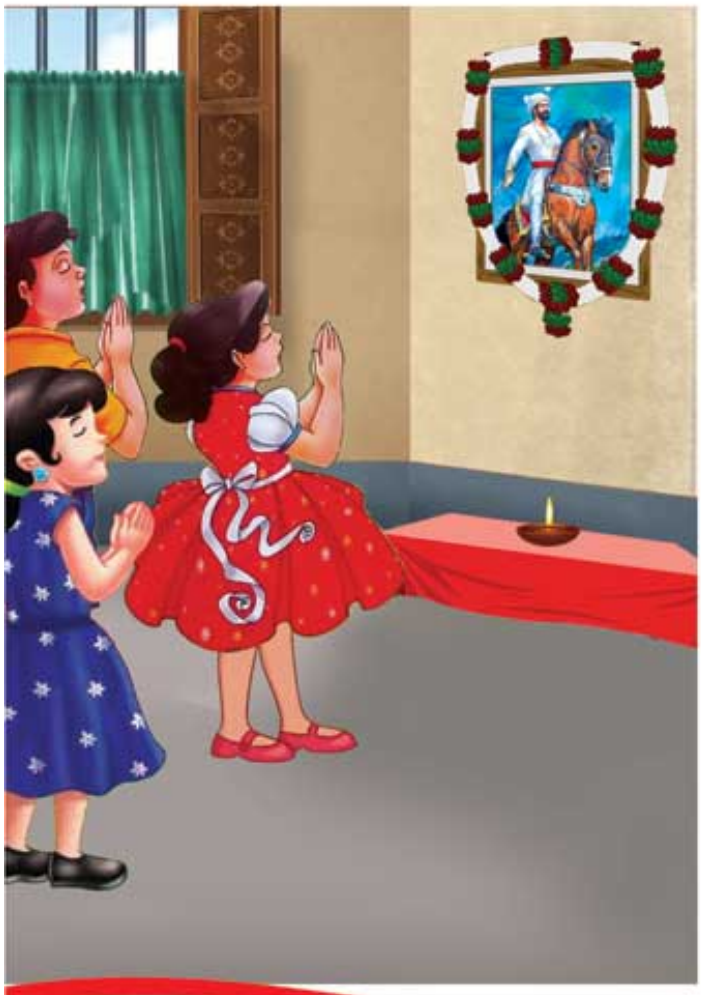

आक्रमण करने का अवसर ही नहीं मिलता। यह रात में अचानक से शत्रु पर वार करते हैं। शत्रु बौखला जाता है। ऐसे ही युद्ध करते थे वीर शिवाजी। जब उनके पास सेना कम बची तो उन्होंने गोरिल्ला युद्ध से ही दुश्मनों को परास्त किया।

(झुमरू डब्बू पायल ताली बजाते हैं वाह!! वाह!!)

झुमरू – वीर शिवा धनुष चलाते थे या तलवारबाजी करते थे?

डब्बू – और नहीं तो क्या बंदूक चलाते थे, बुद्धू।

बोड़म दादा – झगड़ो नहीं। वीर शिवाजी बहुत निराले थे। बचपन में शिवाजी अपनी उम्र के बालकों के साथ नेता बनकर युद्ध करते और किले जीतने का खेल–खेलते थे। फिर युवावस्था में यही खेल उन्होंने सच कर दिखलाये। पुरंदर और तोरण जैसे किलों पर अधिकार जमाया।

मक्खन भैया – दादा! उनके गोरिल्ला युद्ध से तो दुश्मन भय खाते होंगे?

बोड़म दादा – अरे! उनके नाम और काम की तो सारे दक्षिण में ऐसी धूम फैल गई कि अत्याचारी यवन और तुर्क डर के मारे थर–थर काँपने लगे।

पायल – तो क्या वे बचपन से ही तलवार चलाते थे?

बोड़म दादा – बच्चों! उनकी माता जीजाबाई बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। वे रामायण, महाभारत की कहानियाँ, देश पर मर मिटने वाले वीरों की कहानियाँ शिवा को बचपन से ही सुनाती थीं जिसका प्रभाव वीर शिवा पर पड़ा और उनकी माता ने बचपन से ही शिवा को युद्ध कला में प्रवीण कर दिया। तलवारबाजी घुड़सवारी, निशानेबाजी, भाला,

बरछी, तीर, तलवार सब चलाना सिखाया। वीर शिवा दोनों हाथों से तलवार घुमाते शत्रुओं को मारते चलते थे। हर-हर महादेव जय भवानी के नारों से रणभूमि गूंज उठती थी। शत्रु दल घबराते थे।

झुमरू – मंच पर रखी तलवारें उठाकर घुमाने लगता है ऐसे चलाते होंगे।

पायल – रख दो, रख दो, अभी तुम्हारे पेट में ही घुस जाएगी। (सभी ताली बजाकर हँसते हैं।)

मक्खन भैया – भाई मेरे! बहुत अभ्यास की जरूरत होती है यह कला ऐसे ही नहीं आती।

झुमरू – (शर्मिंदा होकर तलवार रखते हुए) ठीक है ठीक है।

डब्बू – शिवाजी की वीरता के कुछ किस्से और सुनाइए ना दादा! इस झुमरू को तो ऊधम सूझता है।

झुमरू – अरे नहीं! मैं भी सुनना चाहता हूँ। वह तो तलवारें चलाने का सुनकर मुझे जोश आ गया था।

पायल – हाँ बुद्धू! जोश में होश नहीं खोना चाहिए।

झुमरू – हाँ हाँ! मेरी ज्ञानी नानी।

बोड़म दादा – सुनो बच्चो! शिवाजी महाराज ऐसे वीर नायक थे। जिन्होंने मात्र १६ वर्ष आयु में तलवार से अपने शौर्य दिखाना आरंभ कर दिए थे और मुगल साम्राज्य की नींव हिला दी थी। हर हर महादेव, जय भवानी कहकर तलवार घुमाते हुए सिंह की तरह युद्ध भूमि में हुँकार भरते थे।

डब्बू – उनके गुरु कौन थे? जिन्होंने शिवाजी को इतना पराक्रमी बनाया।

पायल – वाह! डब्बू पहली बार तुमने कुछ अक्ल की बात की है।

झुमरू – हाँ! अपना डिब्बापन छोड़ के।

डब्बू – बताऊँ क्या?

मक्खन भैया – ओफ्फो! अपने प्रश्न का उत्तर तो सुनो पहले दादा से।

बोड़म दादा – बच्चो! शिवाजी की प्रथम गुरु तो उनकी माता थीं जिनके द्वारा सुनाई गई कहानियों ने उन्हें वीर नायक बना दिया। दूसरे गुरु उनके दादाजी कोंणदेव भोंसले थे जिन्होंने शिवा को रणनीति और राजनीति सिखाई। तीसरे गुरु थे संत तुकाराम जी जिन्होंने सामाजिक समरसता सिखाई और चौथे गुरु थे संत समर्थ रामदासजी जिन्होंने आध्यात्मिकता दर्शन की बातें बताई। हिन्दुत्व का संरक्षण करना सिखाया। सनातन धर्म की रक्षा करना सिखाया और सिखाया कि यही जीवन का सार है। इन महान गुरु के संस्कारों में पड़ बढ़कर शिवा का व्यक्तित्व सभी रूपों में निखर गया।

पायल – शिवाजी के बचपन की कुछ और बातें बताइए ना दादा! हम लोगों की जिज्ञासा बढ़ती जा रही है।

बोड़म दादा – सुनो बच्चो! जब शिवाजी १२ वर्ष के थे तब उनके पिता शाहजी भोंसले उन्हें बीजापुर सुल्तान के दरबार में ले गए। पिता ने सुल्तान का अभिवादन किया और शिवा से भी कोर्निश (प्रणाम) करने को कहा।

डब्बू – शिवा ने तो जल्दी से कर लिया होगा। बच्चे तो देखा सीखी करते हैं ना।

बोड़म दादा – नहीं शिवा ने कोर्निश करने से मना कर दिया।

झुमरू – अरे क्यों?

बोड़म दादा – शिवा ने कहा हम किसी भी विदेशी के सामने नहीं झुकेंगे।

पायल – उनके पिता ने डाँटा नहीं?

बोड़म दादा – नहीं! वह खुश हुए। मन ही मन

शिवा के साहस की सराहना करने लगे।

झुमरू – शिवा को डर नहीं लगा?

बोड़म दादा – नहीं देशभक्ति और राष्ट्रवादी होने के संस्कार उनकी माता जीजाबाई ने बचपन से ही डाल दिए थे।

झुमरू – इसका मतलब है कि हम सबको बचपन से ही वीरों की जीवन गाथाएँ पढ़नी चाहिए। अपने इतिहास पुरुषों को जानना चाहिए।

बोड़म दादा – बिल्कुल सही समझा तुमने।

पायल – दादाजी! शिवा की लड़ाई किससे हुई थी?

बोड़म दादा – (जोश में भरकर) अब पूछी तुमने पराक्रम और जोश की बात (पूरे हाव–भाव के साथ खड़े होकर) सुनो मेरे प्यारे बच्चो! शिवाजी ने बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह से युद्ध किया सिंह की तरह हुँकार भरते हुए तोरण के किले पर आक्रमण किया। आदिलशाह के १०,००० सैनिक थे और शिवा के मराठा सैनिक मात्र ३००, लेकिन एक–एक सैनिक सौ–सौ पर भारी था। हर हर महादेव, जय भवानी घोड़े पर सवार शिवा भाले, बरछी, तीर, तलवारों से युद्ध करता, मारकाट करता, शत्रु की छाती थरथर काँप उठती। आदिलशाह ने छल से शिवा के पिता को बंदी बना लिया।

पायल – फिर क्या हुआ? युद्ध बंद हो गया?

बौड़म दादा – नहीं! शिवा रुका नहीं, डरा नहीं, छापामार रणनीति से दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए। पुरंदर के किले पर हमला बोल दिया तो डर के मारे आदिलशाह ने शिवा के पिता को छोड़ दिया।

झुमरू – (ताली बजाते हुए) फिसड्डी! आगे क्या हुआ?

बोड़म दादा – (पूरे हाव–भाव के साथ) शिवा को पटखनी देने के लिए सुल्तान ने योजना बनाई और अपने खास सेनापति अफजल खान को भेजा।

झुमरू – (डब्बू को उठाकर पटखनी देते हुए) ऐसी दी होगी पटखनी।

(सब ताली बजाकर हँसते हैं।)

बोड़म दादा – नहीं बच्चो! बात १६५९ ईस्वी की है। अफजल खान ने युद्ध की घोषणा कर दी और युद्ध के पहले प्रतापगढ़ में शिवा को मिलने बुलाया।

डब्बू – अरे! दुश्मन ने मिलने बुलाया।

पायल – तो फिर कैसे मिले होंगे शिवा?

बौड़म दादा – शिवा ने अपने कपड़ों के नीचे कवच डाला और अपनी दाईं भुजा में बाघ नख यानि बघनखा रखा और अफजल खान से मिलने चल दिए।

झुमरू – फिर क्या हुआ। मुझे तो डर लग रहा है (डब्बू का हाथ थामते हुए।)

बोड़म दादा – (पूरे हाव–भाव के साथ) अफजल खान ने गले मिलने के बहाने शिवा को बाहों में भरा और उनकी पीठ पर छुरा घोंप दिया।

ओह – फिर क्या हुआ?

बोड़म दादा – किन्तु! शिवा कवच के कारण बच गए और उन्होंने वाघनख (बघनखा) से अफजल खान की छाती चीर दी। उसकी मृत्यु हो गई।

(सब ताली बजाते हुए) यह हुई ना कोई वीरों वाली बात वीर शिवा की जय।

झुमरू – बहुत सूझबूझ वाले, विवेकशील थे हमारे शिवा।

पायल – और किससे युद्ध हुआ वीर शिवा का?

बोड़म दादा – उद्दंड अत्याचारी औरंगजेब से भी युद्ध हुआ। रणभूमि में शिवा की घन–घन तलवारें चलने लगीं। वीर मराठा जय भवानी के नारे लगाते हुए कूद पड़े रणभूमि में। औरंगजेब के बेटे मारे

गए औरंगजेब भी मारा गया शिवा का भगवा झंडा फहराने लगा। हर हर महादेव।

सभी एक साथ – वीर शिवा अमर रहे।

बौड़म दादा – और सुनो! औरंगजेब का चाचा था शाइस्ता खान उससे भी युद्ध हुआ वह तो शिवा को कैद कर अफगानिस्तान ले जाना चाहता था।

सब एक साथ – (आश्चर्य और चिंता से) उफ्फ! फिर क्या हुआ?

बोड़म दादा – आसान था क्या शिवा को पकड़ना! वह तो सिंह था, भाग निकला चकमा देकर।

सब जोश में भरकर – वीर शिवा जिंदाबाद।

डब्बू – (खड़े होकर जोश के साथ) सुन सुन कर बहादुरी के किस्से खून मेरा खौलने लगा है।

झुमरू – चुपकर, तू अभी मुझे ही पटखनी देने लगेगा। सीमा पर जाकर दुश्मनों से लड़ना। अभी चुपचाप बैठ।

(सब तालियाँ बजाते हैं।)

डब्बू – (मुँह बनाते हुए।) ठीक है, ठीक है, बैठ जाता हूँ।

पायल – शिवाजी की मृत्यु कब हुई दादा?

बोड़म दादा – छत्रपति शिवाजी ने ६ जून १६७४ में छत्रपति का मुकुट पहना और अपना साम्राज्य स्थापित किया। मात्र ५० वर्ष की आयु में ३ अप्रैल १६८० में उनकी मृत्यु महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में हुई।

भारत के वीर सपूत श्रीमंत छत्रपति शिवाजी महाराज जिन्हें हिंदू 'हृदय सम्राट' कहते थे कुछ लोग 'मराठा गौरव' कहते थे। वे स्वतंत्रता के पुजारी थे। वीर स्वतंत्रता सेनानी थे। महिलाओं का सम्मान, और सब धर्मों का सम्मान करते थे। स्वराज की स्थापना के लिए उन्होंने कई युद्ध किये। और स्वराज का विस्तार करते गए।

(सभी बच्चे शिवा की वीर गाथा सुनकर जोश, उत्साह, उमंग से भर जाते शिवाजी की तस्वीर के पास खड़े होकर गीत गाते हैं।)

झुमरू – जय शिवनेरी दुर्ग जहाँ
जन्मा वीर शिवराया था।
शिव समान तेज था जिसमें
नहीं कभी घबराया था।

डब्बू – हर हर महादेव नारों से
रण में तलवार घुमाता था।
किया गोरिल्ला युद्ध
आदिल शाह घबराता था।

पायल – अफजल खान गद्दार की छाती,
बघनख से जिसने चीरी थी।
जय जय हो श्रीमंत शिवा
वीरों में वीर निराला था।

मक्खन भैया – जिसमें स्वराज का था जुनून,
वह सिंह शिवा मतवाला था।
जय हो माता जीजाबाई
जिन्होंने उन्हें संभाला था।

बोड़म दादा – (गंभीर आवाज में)
३ अप्रैल १६८० का
दिन वह काला था।
गया शिवा भारत रोया।
वह हृदय सम्राट हमारा था।

(सभी एक साथ नारे लगाते हैं) वीर शिवा अमर रहे, भारतीय गणराज्य के महानायक की जय, छत्रपति श्रीमंत शिवाजी महाराज की जय, स्वतंत्रता के पुजारी सेनानी की जय।

वीर शिवा अमर रहे... अमर रहे।

(पर्दा गिरता है।)

– कटनी (म. प्र.)

उदारमना क्षमादानी छत्रपति शिवाजी महाराज

– डॉ. इंदु गुप्ता

पात्र परिचय

महाराज – शिवाजी राजे भोंसले (एक सामान्य लेकिन मजबूत कदकाठी का बालक।)

सेनापति – तानाजी राव माळुसरे – (एक लम्बा हृष्ट–पुष्ट बालक।)

मालोजी – एक छोटा बालक।

फारसी भाषा का विद्वान – एक बालक।

दूत – गोपीनाथ (एक बालक)।

दो प्रहरियों और दरबारियों आदि की भूमिका में कुछ बालक। कुल आठ से दस बालक इस एकांकी में अभिनय कर इसका मंचन कर सकते हैं।

दृश्य – एक

मंच पर प्रकाश धीरे–धीरे फैलता है। छत्रपति शिवाजी महाराज का राज–काज करने वाला एक अन्त: कक्ष दिखाई देता है। जिसमें रेशमी झालरदार परदे लगे हुए हैं। दीवारों के कोनों में अग्निशलाकाएँ (मशालें) प्रदीप्त होकर कक्ष को प्रकाशित कर रही हैं। सामने दो आसन हैं। एक आसन पर मध्यकालीन भारत के राजा और मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी राजे भोंसले महाराज विराजमान हैं। उनके साथ उनके बाल–सखा और पल–पल साये की तरह साथ रहने वाले सेनापति तानाजी राव माळुसरे खड़े हैं। साथ में बिछे तख्त पर रखे डेस्क के पीछे हाथ में कालम लिए फारसी भाषा के एक विद्वान बैठे हैं। सामने डेस्क पर मसिपात्र (स्याही की दवात) रखी है। शिवाजी महाराज कुछ बोलकर लिखवाते जा रहे हैं और सामने बैठे फारसी के विद्वान उनके भावों का फारसी भाषा पद्य में अनुवाद कर पत्र लिखते जा रहे हैं।

छत्रपति शिवाजी महाराज – हे सरदारों के सरदार! भाग्य के युवा और बुद्धि के परिपक्व जयशाह (जयसिंह) शिवा का प्रणाम और आशीर्वाद स्वीकार करिये। जगत का जनक तुम्हारा रक्षक तुमको धर्म और न्याय का मार्ग दिखलावे। हे राजाओं के राजा! तथा हे रामचन्द्रजी के वंशज! उनके हृदय के चैतन्य अंश! तुमसे राजपूत क्षत्रियों का मस्तक और ग्रीवा गौरव से ऊँचे हैं।

फारसी भाषा के विद्वान – (इसका अनुवाद फारसी भाषा के पद्य रूप में करते हुए लिखते हैं।) जिगरबंद फर्जानाये रामचन्द्र ज़ि तो गर्दने राजापूतां बुलंद।

छत्रपति शिवाजी महाराज – मैंने सुना है कि मुझ पर आक्रमण करने और दक्षिण देश को जीतने के लिए तुम आये हो?

फारसी भाषा के विद्वान – (इसका अनुवाद फारसी भाषा के पद्य रूप में करते हुए लिखते हैं) शुनीदम कि बर कस्दे मन आमदी–ब फ़तहे दयारे दकन आमदी।

छत्रपति शिवाजी महाराज – हिन्दुओं के हृदय तथा आँखों के रक्त से तुम संसार में ऊँचा व बड़ा दिखना चाहते हो; पर तुम क्या नहीं जानते हो कि इससे मुख काला हो जाता है। तुम क्या यह नहीं जानते कि इससे हिन्द राष्ट्र और धर्म का नाश हो जायेगा। तुम दम भर अन्तर्मुख (भीतर दृष्टि वाले) होकर सोचो और अपने हाथों और अपने दामन पर दृष्टि डालो, तो देखोगे कि यह रंग किसके रक्त का है।

फारसी भाषा के विद्वान – (इसका अनुवाद

फारसी भाषा के पद्य रूप में करते हुए लिखते हैं।) न दानी मगर कि ईं सियाही शवद कज ई मुल्को दीं रा तबाही शवद।

छत्रपति शिवाजी महाराज – यदि आप अपने लिए दक्षिण देश को जीतने के लिए आते तो मेरी आँखें और मेरा सिर तुम्हारे मार्ग में बिछौने बन जाते। मैं भारी सेना को साथ लेकर आपका साथी हो जाता और एक किनारे से दूसरे किनारे तक सारी भूमि आपको सौंप देता। पर तुम औरंगजेब की ओर से आये हो, अगर मैं अपनी तलवार का प्रयोग करूँगा तो दोनों ओर से हिन्दू ही मरेंगे।

फारसी भाषा के विद्वान – (इसका अनुवाद फारसी भाषा के पद्य रूप में करते हुए लिखते हैं।) बगर चारा साजम ब तेगोतबर दो जानिब रसद हिंदुआं रा जर।

छत्रपति शिवाजी महाराज – उचित तो यह होता कि आप धर्म के दुश्मन इस्लाम की जड़ें उखाड़ देते।

फारसी भाषा के विद्वान – (इसका अनुवाद फारसी भाषा के पद्य रूप में करते हुए लिखते हैं।) बि बायद कि बर दुश्मने दीं ज़नी बुनी बेख इस्लाम रा बर कुनी।

छत्रपति शिवाजी महाराज – आपको पता नहीं कि इस कपटी, आततायी ने हिन्दुओं पर क्या–क्या अत्याचार किये हैं। बड़ा आश्चर्य है कि एक मुट्ठी भर मुसलमान हमारे इतने बड़े देश पर शासन करते हैं। उनका यह प्राबल्य उनकी वीरता से नहीं है यदि बुद्धि प्राप्त है तो देखो कि वह हमारे साथ क्या शतरंज की सी चालें चलता है और अपने मुख पर कैसे–कैसे रंग रंगता है, मुखौटे पहनता है। औरंगजेब हमारे पावों को हमारी ही सांकलों से जकड़ता है और वह हमारे सिरों को हमारी ही तलवारों से काटता है।

फारसी भाषा के विद्वान – (इसका अनुवाद फारसी भाषा के पद्य रूप में करते हुए लिखते हैं।) बिदानी कि बर हिन्दुआने दीगर न यामद चि दस्त आं कीनावर।

छत्रपति शिवाजी महाराज – इस आदमी की वफादारी से क्या फ़ायदा? क्या तुम्हें पता नहीं कि इसने अपने बाप शाहजहाँ के साथ क्या किया?

फारसी भाषा के विद्वान – (इसका अनुवाद फारसी भाषा के पद्य रूप में करते हुए लिखते हैं।) ज़ि पासे वफ़ा गर बिदानी सखुन चि कर्दी ब शाहे जहाँ याद कुन।

छत्रपति शिवाजी महाराज – हमें मिल कर हिंद देश हिन्दू धर्म और हिन्दुओं के लिए लड़ना चाहिए।

फारसी भाषा के विद्वान – (इसका अनुवाद फारसी भाषा के पद्य रूप में करते हुए लिखते हैं।) मिरा ज़हद बायद फरावां नमूद –पये हिन्दियो हिंद दीने हिनूद।

छत्रपति शिवाजी महाराज – (कुछ उग्र होकर....) हमें अपनी तलवार और तदबीर से दुश्मन को जैसे को तैसा उत्तर देना चाहिए। हम लोगों को इस समय हिन्दू देशवासियों, हिन्दुस्तान देश और हिन्दुओं के धर्म की रक्षा के लिए भीषण प्रयत्न करना चाहिए। हमको चाहिए कि हम सब मिलकर परामर्श करें और कोई विचार–विनिमय तथा निश्चय करके देश को स्वतन्त्र कराने के लिए हाथ पाँव मारें।

फारसी भाषा के विद्वान – (इसका अनुवाद फारसी भाषा के पद्य रूप में करते हुए लिखते हैं।) ब शमशीरो तदबीर आबे दहम ब तुर्की बतुर्की जवाबे दहम।

छत्रपति शिवाजी महाराज – अगर आप मेरी सलाह मानेंगे तो आपका लोक–परलोक नाम होगा।

फारसी भाषा के विद्वान – (इसका अनुवाद फारसी भाषा के पद्य रूप में करते हुए लिखते हैं।)

तराज़ेम राहे सुए काम ख्वेश–फरोज़ेम दर दोजहाँ नाम ख्वेश।

छत्रपति शिवाजी महाराज – हम लोग अपनी सेनाओं की लहरों और तरंगों को दिल्ली में उस नष्ट–भ्रष्ट घर (राजमहल) में पहुँचा दें। उसके नाम से न औरंग (राजसिंहासन) रहे न जेब (शोभा) रहे... न अत्याचार करने वाली तलवार रहे, न छल–कपट का जाल रहे। हम लोग शुद्ध रक्त से भरी हुई एक नदी बहा दें और उससे अपने पितरों की आत्माओं को पानी दें (तर्पण करें) न्याय–परायण प्राणों के उत्पन्न करने वाले ईश्वर की सहायता से हम लोग (औरंगजेब) का स्थान पृथ्वी के नीचे (कब्र में) बना दें। यह काम कुछ बहुत कठिन नहीं है केवल हृदयों, आँखों और हाथों की आवश्यकता है। दो हृदय यदि एक हो जायें तो पहाड़ को तोड़ सकते हैं और समूह के समूह को तितर–बितर कर सकते हैं।

इस विषय में मुझको तुम्हारे साथ बहुत कुछ कहना है जिसको पत्र में लिखना उचित नहीं है। मैं चाहता हूँ कि हम लोग परस्पर बातचीत कर लें जिससे व्यर्थ दु:ख और बर्बादी न मिले। यदि तुम चाहो तो मैं तुमसे साक्षात बातचीत करने आऊँ और कुछ रहस्यमयी बातों को एकांत में तुम्हारे साथ साझा करूँ। अपने कार्य की सिद्धि को कोई मार्ग निकाल कर दोनों लोकों (इस लोक और परलोक) में अपना नाम ऊँचा करें। तलवार की शपथ, घोड़े की शपथ, देश की शपथ और धर्म की शपथ से करता हूँ कि इससे तुम पर कदापि कोई आपत्ति नहीं आयेगी। क्योंकि तुमको भी स्वयं मुझसे कुछ शत्रुता नहीं है। यदि मैं आपका यथेष्ट और उचित उत्तर पाऊँ तो आपके समक्ष रात्रि को अकेला आऊँ। मैं तुमको वह गुप्त पत्र भी दिखाऊँ जो मैंने शाईस्ता खाँ की जेब से पकड़ा है। तुम्हारी आँखों पर से मैं संशय का परदा हटा दूँ।

फारसी भाषा के विद्वान – (पूर्ववत तटस्थ भाव से इसका अनुवाद फारसी भाषा के पद्य रूप में करते हुए लिखते हैं।) फिर पत्र–लेखन पूर्ण करके वह उसे शिवाजी महाराज को दे देते हैं।

फारसी भाषा के विद्वान – जी महाराज साहेब! कोई अन्य आदेश?

छत्रपति शिवाजी महाराज – नहीं, और कुछ नहीं। बस अब आप प्रस्थान कीजिये।

फारसी भाषा के विद्वान – हर हर महादेव... कहकर शिवाजी महाराज के आदेश से और पार्श्व में खड़े सेनापति तानाजी राव को प्रणाम करते हुए बाहर की ओर प्रस्थान करते हैं।) (पत्र पर लिखावट देखते हुए शिवाजी महाराज अपने सेनापति और बालसखा तानाजी माळुसरे से राजमुद्रा लाने को कहते हैं।)

तानाजी राव माळुसरे – लीजिए महाराज साहेब!

छत्रपति शिवाजी महाराज – (तानाजी से अपनी अष्टकोणीय मुहर (राजमुद्रा) हाथ में लेकर निहारते हैं। यह वही राजमुद्रा थी जो शिवाजी के पिता शाहजी राजे भोंसले ने उन्हें तब प्रदान की थी जब शाहजी ने जीजाबाई और तरुण शिवाजी को पुणे की जागीर संभालने के लिए भेजा था। राजमुद्रा पर संस्कृत में लिखा वाक्य पढ़ते है– 'प्रतिपच्चंद्रलेखेच वर्धिष्णुर्विश्ववंदिता शाहसुनो: शिवस्यैषा मुद्रा भद्राय राजते। (अर्थ – जिस प्रकार बाल चन्द्रमा प्रतिपद (धीरे–धीरे) बढ़ता जाता है और सारे विश्व द्वारा वंदनीय होता है, उसी प्रकार शाहजी के पुत्र शिव की यह मुद्रा भी बढ़ती जाएगी। .... फिर कुछ विचार करते हुए और राजमुद्रा तानाजी की ओर बढ़ा देते हैं।

सेनापति तानाजी राव माळुसरे – महाराज साहेब! जिस दिन से हमारे खुफिया विभाग के प्रमुख बहिरजी नाइक ने शत्रु की गतिविधियों की सूचना दी है कि औरंगजेब ने मिर्जा राजा जयसिंह को दक्षिण फतेह करने की कमान दी है। आप अत्यन्त चिंतित हैं।

(तानाजी राजमुद्रा मुहर पत्र पर लगाते हुए साथ-साथ गंभीर स्वर में शिवाजी महाराज से कहते हैं।)

छत्रपति शिवाजी महाराज – हम चिंतित से अधिक चिंतन में तानाजी! वह इसलिए कि नराधम कट्टर और उद्दंड औरंगजेब एक तीर से दो शिकार करना चाहता है। इतने समर्थ परिपक्व और अनुभवी हिंदू मिर्जा राजा जयसिंह को ८०,००० की एक बड़ी सेना और क्रूर दिलेर खान के साथ हिंदुओं से लड़वाने भेज दिया। मिर्जा राजे जयसिंह अकबर के प्रसिद्ध नवरत्नों में से एक राजा मानसिंह के वंशज हैं। इनका परिवार वर्षों से मुगल सिंहासन का बहुत ही वफादार रहा है। मुगल राज्य निर्माण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

तानाजी राव – पक्की सूचना तो यह भी है महाराज! कि मिर्जा राजे ने इस युद्ध में जीत हासिल करने के लिए एक सहस्र चंडी यज्ञ भी कराया है। तो क्या वह हमारी बात मानेंगे ?

छत्रपति शिवाजी महाराज – हाँ तानाजी! हम जानते हैं कि वह राजपूत हैं और अपनी जुबान का पक्का और मुगलों के प्रति वफादार भी है। फिर भी अपने हिंदवी स्वराज्य की स्थापना के सपने में कील गड़ता देखकर यह हमारा एक प्रयास है कि हम सब एकजुट होकर अपने हिन्दुत्व और हिन्दू राष्ट्र के लिए युद्ध करें न कि इन विधर्मी दरिन्दों आततायियों के लिए। इसीलिए यह पत्र भेजकर हम अपना एक कर्त्तव्य पालन और प्रयास कर रहे हैं कि किसी तरह हिन्दुओं का रक्तपात न हो। इसीलिए हमने यह पत्र फारसी में लिखवाया है कि औरंगजेब के मातहतों को यह कोई गुप्त पत्र प्रतीत न हो। बस अब आप इसे शीघ्रता से भिजवाने का....।

तानाजी राव माळुसरे – जी महाराज साहेब! मैं अभी सब प्रबंध करता हूँ। परन्तु राजे... आप कई रातों से ठीक से सोए तक नहीं हैं। हो सकता है राजा जयसिंह आपको कल भेंट करने के लिए समय दे दें। तो आपको वहाँ भी जाना होगा। मैं यह पत्र दूत गोपीनाथ के द्वारा मिर्जा राजा जयसिंह के ठिकाने पर पहुँचाने को प्रबंध करता हूँ। आप अब जाकर विश्राम कीजिए। तानाजी शिवाजी महाराज को उनके शयन कक्ष तक छोड़ते हैं। जय भवानी.. हर हर महादेव...।

छत्रपति शिवाजी महाराज – हर हर महादेव..! कहते हुए अपने शयन कक्ष में चले जाते हैं।

सेनापति तानाजी राव – (कक्ष में मुड़ते हैं और बुलंद आवाज में सेवक को पुकारते हैं।) संभोजी, दूत गोपीनाथजी को शीघ्र भेज दीजिये।

(तभी राज काज वाले अन्त: कक्ष में दूत गोपीनाथ उपस्थित होता है।)

दूत गोपीनाथ – हर हर महादेव....! प्रणाम श्रीमंत, आदेश की सादर प्रतीक्षा है श्रीमंत।

तानाजी राव माळुसरे – शिवाजी द्वारा फारसी भाषा के विद्वान से लिखवाया गया पत्र दूत गोपीनाथ को सौंपते हुए समझाते हैं। गोपीनाथ जी आप अपने

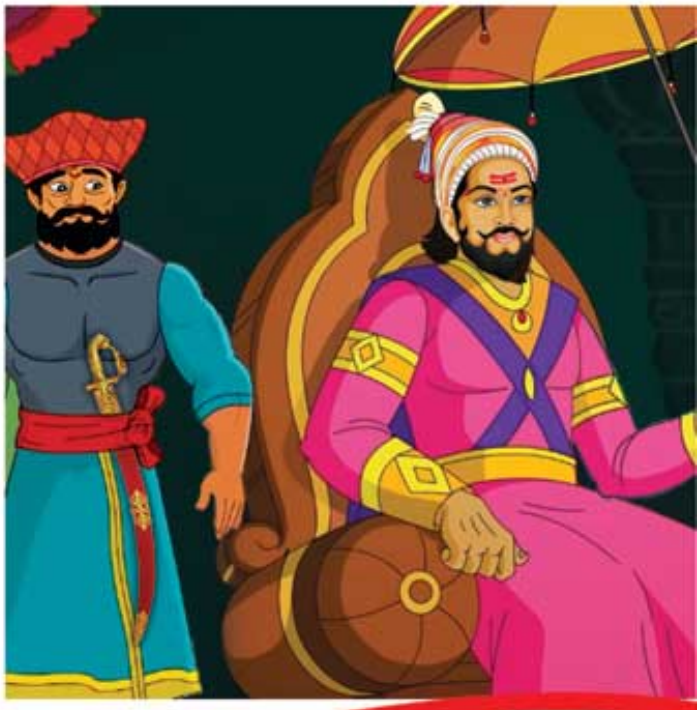

चारों शूरवीर साथियों को लेकर पूरी सुरक्षा तथा सावधानी बरतते हुए और यथासम्भव अति शीघ्रता से साथ महाराज साहब का यह महत्वपूर्ण संदेश पत्र मिर्जा राजे श्रीयुत जयसिंह तक पहुँचा दें। महाराज साहेब की तरफ से उनसे आग्रह करके बिना विश्राम और विलम्ब किये तुरंत इसका उत्तर भी लेकर लौटिये।

दूत गोपीनाथ – जी श्रीमंत! आप निश्चिंत रहें। काम यथासंभव पूर्णनिष्ठा और सतर्कता के साथ सम्पन्न किया जायेगा। हर हर महादेव!

तानाजी राव माळुसरे – हर हर महादेव! माँ तुळजा भवानी आपकी रक्षा करें। (तानाजीराव गम्भीर मुद्रा में गोपीनाथ को द्वार के बाहर छोड़ने जाते हैं।)

दृश्य – दो

तानाजी राव – गोपीनाथ को विदा करके अंत: कक्ष की ओर मुड़कर भीतर पहुँचते हैं तो उन्हें अँधेरे में एक परछाई दिखाई देती है।

तानाजी राव – (एकाएक चौंक उठते हैं।) अरे साफे से मुँह को लपेटे यह तो काई बालक जान पड़ता है। वह अचम्भित होकर, ''अरे! कौन? (कहना

चाहते हैं लेकिन तानाजी राव स्वयं को रोक लेते हैं।) स्वयं से बुदबुदाते हैं, जानना चाहिये कि रात को सुरक्षा– प्रहरियों की दृष्टि से बचकर यह बालक यहाँ क्या करने आया है। महाराज की हर समय खुला दरबार रखने की उदारता के चलते कोई भी यहाँ सरलता से घुसने का साहस कर लेता है। देखना चाहिये कि आखिर यह लड़का क्या करने आया है?

(सोचते सोचते तानाजी उस साये का पीछा करते हैं। अरे! यह तो शिवाजी महाराज के शयन कक्ष की ओर.....)

घुसपैठिया बालक – (महाराज शिवाजी के कक्ष के द्वार पर खड़े होकर एक बार इधर–उधर देखता है। अपने मुख पर लपेटी पगड़ी के छोर को हाथ से जाँचता है। हाथ जोड़कर 'हर हर महादेव' बुदबुदाता है। फिर दबे पाँव धीरे–धीरे सतर्कतापूर्वक भीतर बढ़ जाता है। अंदर पहुँचकर उस लड़के ने तलवार निकाली और वह शिवाजी पर हमला करने ही वाला था कि तुरंत पीछे से सेनापति तानाजी राव माळुसरे ने उसका हाथ पकड़ लिया। तभी शिवाजी की भी नींद खुल गई।)

छत्रपति शिवाजी महाराज – (चकित होकर..) अरे बालक तुम कौन हो और इस तरह तलवार लेकर मेरे कक्ष में क्यों आये हो?

घुसपैठिया बालक – (निडरता पूर्वक उत्तर देता है।) मेरा नाम मालोजी है और मैं शिवाजी महाराज यानी आपका वध करने आया था।

छत्रपति शिवाजी महाराज – बालक हमने तुम्हारा क्या नुकसान किया है भला! आखिर तुम हमें मारना क्यों चाहते थे?

बालक मालोजी – महाराज! मेरे पिता आपकी सेना में एक सैनिक थे। वे युद्ध में मारे गए। मेरी

माँ बहुत दिनों से बीमार चल रही है। वह कई दिनों से भूखी है। हम माँ–बेटा बेहद कष्टमय जीवन जी रहे हैं। मैं किसी काम की तलाश में भटकता हुआ आपके शत्रु सुभागराय के पास पहुँच गया। उसने मुझे आपके विषय में काफी भला–बुरा कहा और बोला कि शिवाजी राजे तेरे और मेरे दोनों के शत्रु हैं। तू मेरे और अपने शत्रु शिवाजी को मार दे, तो तुझे बहुत–साध धन दूँगा।

तानाजी राव माळुसरे – (अत्यन्त क्रोध में) मूर्ख बालक! धन के लोभ में आकर तू छत्रपति शिवाजी महाराज का वध करने आया है, क्या तू जानता नहीं था कि पकड़े जाने पर मृत्युदण्ड मिलेगा?

बालक मालोजी – मैं सब जानता था श्रीमंत! परन्तु माँ की भूख और बीमारी के कारण मैं यह सब जानते हुए भी महाराज को मारने चला आया।

तानाजी राव माळुसरे – बालक! तू रंगेहाथ पकड़ा गया है और तूने अपना अपराध स्वीकार भी कर लिया है। अब तू मरने के लिए तैयार हो जा।

मालोजी (शिवाजी से) – महाराज! मैंने आपका वध करने की कोशिश की है, अत: निस्संदेह मैं कठोर दण्ड का पात्र हूँ, किन्तु कृपा करके मुझे अभी के लिए जाने दीजिये। मेरी माँ भूखी और बहुत बीमार है। वह जल्द ही मर जाएगी। माँ को प्रणाम करके और उसका आशीर्वाद लेकर मैं सुबह आपके सामने उपस्थित हो जाऊँगा। कृपया अभी मुझे जाने दें।

तानाजी हँसते हुए बोले – अब हम तेरी बातों के धोखे में आने वाले नहीं है, दुष्ट बालक!

बालक मालोजी – मैं एक मराठा हूँ सेनापति महोदय! और मराठा कभी झूठ नहीं बोलते। न ही किसी को धोखा देते हैं।

छत्रपति शिवाजी महाराज – तानाजी! बालक को जाने दीजिये। ठीक है, बालक, तुम जाओ। कल आ जाना।

बालक मालोजी – झुककर प्रणाम करता है और चला जाता है।

दृश्य – तीन

अगली सुबह राजदरबार में छत्रपति शिवाजी महाराज सिंहासन पर बैठे हुए हैं। साथ में सेनापति तानाजी राव माळुसरे और कुछ दरबारी बैठे हैं। शिवाजी महाराज व्यग्रता और उत्सुकता से दूत गोपीनाथ की प्रतीक्षा कर रहे हैं। तभी द्वारपाल आज्ञा लेकर भीतर आता है।

छत्रपति शिवाजी महाराज – (उत्सुकता से) हाँ बोलो?

द्वारपाल – हर हर महादेव महाराज! एक बालक आपसे मिलना चाहता है।

छत्रपति शिवाजी महाराज – बालक? ठीक है भेज दो उसको।

(यह वही बालक मालोजी था जिसे कल रात शिवाजी ने माँ का आशीर्वाद लेने जाने दिया था।)

छत्रपति शिवाजी महाराज – अरे मालोजी! तुम! तुम तो सचमुच लौट आये?

मालोजी – जी मैं आपका अपराधी हूँ महाराज! आपने मुझे माँ से मिलने जाने दिया इसके लिए आपका बहुत–बहुत आभार महाराज! अब आप जो चाहे मुझे दण्ड दे सकते हैं।

छत्रपति शिवाजी महाराज – (सिंहासन से उठकर उस बालक को गले लगाते हुए) नहीं! मालोजी नहीं! तुम जैसे सत्यनिष्ठ मराठाओं को अगर मृत्यु–दण्ड दे देंगे तो फिर हमारी आन–बान कौन जिंदा रखेगा? हमने तुम्हें क्षमा किया। आज से तुम हमारी सेना में प्रशिक्षु–सैनिक हो। तुम हमारे वीर सैनिक के बेटे हो। भूल राज्य से हुई है। हम तुम्हारे परिवार का ध्यान नहीं रख सके। हम तुम्हारे परिवार की आजीवन भरण–पोषण की व्यवस्था करते हैं। तुम्हारी माँजी की राज्य से चिकित्सा व्यवस्था भी। **(परदा गिरता है)**

– फरीदाबाद (हरियाणा)

अफजल खान का षड्यंत्र

– इंजी. आशा शर्मा

पात्र परिचय

जीजाबाई – शिवाजी की माता (राजसी वेशभूषा में अत्यंत प्रभावशाली प्रौढ़ महिला।)

शिवाजी – मराठा सरदार (मध्यम कदकाठी का युवा जिसके चेहरे पर वीरता का दर्प है।)

अफजल खान – औरंगजेब का सेनानायक (ऊँचे डील–डौल का प्रौढ़ योद्धा जिसकी आँखों से क्रूरता टपकती है।)

कृष्णाजी भास्कर – अफजल खान का दूत।

गोपीनाथ पंत – शिवाजी का दूत।

सैयद बंदा – अफजल खान का विशेष अंगरक्षक (विशालकाय शरीर वाला यह व्यक्ति देखने में बहुत खूँखार लगता है।)

सहयोगी १ – अफजल खान का अंगरक्षक।

सहयोगी २ –अफजल खान का अंगरक्षक।

सहयोगी ३ – तानाजी माळुसरे (शिवाजी का साथी।)

सहयोगी ४ – जीवा महला (शिवाजी का साथी।)

दृश्य – एक

स्थान – अफजल खान का शिविर, परदा उठता है।

(मंच पर रौशनी होने के साथ ही जंगल में लगे शिविर को दृश्य दिखाई देता है। सैनिक इधर–उधर पेड़ों और घाटियों में छिपे हुए हैं। शिविर के भीतर अफजल खान अपने विश्वसनीय अंगरक्षकों के मध्य खड़ा कहीं कूच करने की तैयारी कर रहा है। दूत कृष्णाजी भास्कर प्रवेश करता है।)

कृष्णाजी – यह क्या हुजूर? इस तरह से तो बनती हुई बात बिगड़ जाएगी।

अफजल खान – क्या मतलब? ऐसा क्या कर रहा हूँ मैं?

कृष्णजी – शिवाजी आपसे इसी शर्त पर मिलने के लिए तैयार हुए हैं कि यह मुलाकात केवल आप दोनों के बीच होगी और वह भी एकांत में। यदि आप अपने साथ इतना बड़ा लवाजमा लेकर जाएँगे तो क्या वह आपसे मिलने अकेले आयेंगे? और फिर जब आमने–सामने युद्ध ही करना था तो इस नौटंकी की क्या आवश्यकता थी? इस तरह से तो मैं झूठा कहलाऊँगा।

अफजल खान – लेकिन यह सेना थोड़ी है, अंगरक्षक हैं हमारे। अब तुम ही कहो, एक बादशाह के साथ यदि इतने से लोग भी नहीं होंगे तो उसके रुतबे का क्या होगा? आखिर बीजापुर के सरदार हैं हम।

कृष्णाजी – (नाराजगी के साथ) और यदि आपका रुतबा देखकर शिवाजी को भी अपना रुतबा याद आ गया तो?

अफजल खान – (अपनी तलवार संभालते हुए) अरे! तो हम कहाँ इन्हें अपने साथ शिविर के भीतर ले जा रहे हैं। ये सब तो बाहर ही तैनात रहेंगे। हम अपने वादे के अनुसार शिवाजी से एकांत में ही मिलेंगे।

कृष्णाजी– तो फिर मेरी बात मानिए, सिपाहियों का चक्कर छोड़िए और अपने साथ केवल दो सहायक लेकर जाइए। इसी शर्त पर मैंने शिवाजी से आपकी भेंट की गुजारिश की थी।

अफजल खान – तो ठीक है। हम केवल दो ही सहायक अपने साथ लेकर जाएँगे लेकिन उनमें से

एक सैयद बंदा अवश्य होगा।

(सैयद बंदा का नाम सुनकर कृष्णाजी भास्कर के चेहरे पर परेशानी और भय के भाव आते हैं लेकिन वे कुछ बोल नहीं पाते। अफजल खान पालकी में बैठकर कूच करता है। उसके साथ सैयद बंदा और दो अंगरक्षक चल रहे हैं।)

दृश्य – दो

स्थान – प्रतापगढ़ का किला। शिवाजी का कक्ष।

(शिवाजी अफजल खान से भेंट करने के लिए तैयार हो रहे हैं। उन्होंने अपनी पगड़ी के नीचे लोहे का टोप लगाया। कपड़ों के नीचे कवच पहना। दाहिने हाथ में बिछुआ छिपाया और बाएँ हाथ की अँगुलियों में वाघनख (बघ नखा) धारण किया। उसी समय माँ जीजाबाई का प्रवेश होता है।)

जीजाबाई – काम बहुत होशियारी का है शिवा। सुना है शत्रु बहुत ही धूर्त और चालाक है।

शिवाजी – चिंता नहीं करें माँ साहेब! तुळजा भवानी ने चाहा तो विजय आपकी ही होगी। (वे माता के चरण छूने के लिए झुकते हैं। तभी तानाजी माळुसरे और जीवा महला का प्रवेश होता है।)

जीजाबाई – (आशीर्वाद की मुद्रा में) विजयी भव। (तानाजी माळुसरे और जीव महला की तरफ देखते हुए।) हिन्दू गौरव की रक्षा की जिम्मेदारी आपको सौंप रही हूँ।

(दोनों शीश झुकाकर माता को प्रणाम करते हैं। शिवाजी सहित सभी का प्रस्थान।)

दृश्य – तीन

मंच पर अँधेरा है। धीरे–धीरे प्रकाश होता है।

स्थान – अफजल खान की छावनी और शिवाजी के महल के मध्य अस्थाई रूप से बनाया गया एक शिविर। एक तरफ से पालकी में अफजल खान अपने दूत कृष्णाजी, सैयद बंदा और दो अंगरक्षकों के साथ तथा दूसरी ओर से शिवाजी अपने दूत गोपीनाथ, तानाजी माळुसरे एवं जीवा महला के साथ मंच पर प्रवेश करते हैं। उन्हें देखकर शिवाजी ठिठक जाते हैं।)

शिवाजी – गोपीनाथजी! यह पालकी के साथ भारी–भरकम आदमी कौन है?

गोपीनाथ – यह अफजल खान का खास अंगरक्षक सैयद बंदा है। साये की तरह इसके साथ बना रहता है। सुना है इसमें एक सांड के बराबर ताकत है। (शिवाजी हुँकार भरते हैं।)

गोपीनाथ – अफजल खान तो इससे भी डेढ़ गुना होगा।

शिवाजी – (हँसते हुए) यानी मैं तो इनके कंधे के बराबर ही रहूँगा।

गोपीनाथ – ये तो केवल कागजी शेर हैं। आप असली सिंह हैं। इनका और आपका क्या मुकाबला? आप इनसे सवाये ही रहेंगे।

शिवाजी – वो सब तो ठीक है लेकिन फिर भी मैं निहत्था हूँ और मुझे पूरा विश्वास है कि अफजल खान ने अवश्य ही हथियार छिपाकर रखे होंगे। इस समय खतरा लेना समझदारी नहीं होगी। आप कृष्णाजी से कहकर इसे उधर ही रोकिये।

गोपीनाथ – (प्रस्थान करते हुए) मैं प्रबंध करता हूँ।

(दोनों दूतों का आपसी वार्तालाप। सैयद बंदा निर्धारित स्थान से पहले ही रुक जाता है। शिवाजी तम्बू की ओर बढ़ते हैं।)

दृश्य – चार

स्थान – सजा हुआ तम्बू।

(शिवाजी और गोपीनाथ तम्बू के भीतर बैठे हैं। अफजल खान कृष्णाजी के साथ भीतर प्रवेश करता है। वह शिविर की चकाचौंध देखकर हैरान होता है।)

अफजल खान – मामूली से जागीदार के छोकरे की इतनी शान शौकत?

कृष्णाजी – कहाँ हुजूर! आपके सामने उसकी भला क्या औकात। यह सब तो आपको भेंट करने के लिए लाया गया है। (अफजल खान अपना सीना फुलाता हुआ पूरे तम्बू का मुआयना करता है।)

अफजल खान – यह क्या बदतमीजी है? हम मेहमान हैं। कायदे के अनुसार मेजबान को पहले से यहाँ मौजूद रहना चाहिए था। शिवाजी अभी तक आया क्यों नहीं? क्या हमारा अपमान करने के लिए?

कृष्णाजी – (फुसफुसाया) तो वह गोपीनाथ के साथ कौन बैठा है?

अफजल खान – (हिकारत से) यह शिवाजी है? क्या इसी पिद्दी से लड़के की ताकत पर मराठा इतना इतराते हैं। चूहे जैसा शरीर और कहलाता शेर है। मैंने तो सोचा था मुझसे भी तगड़ा होगा। (मन ही मन स्वयं से बात करते हुए) इसे तो मैं अपनी काख में दबाकर चूहे की तरह मसलकर रख दूँगा।

(अफजल खान शिवाजी के पास पहुँच जाते हैं। शिवाजी मेहमान का स्वागत करने के लिए उठ खड़े होते हैं।)

शिवाजी – आइये–आइये! आप तो हमारे मेहमान हैं और उम्र में मेरे पिता के समान भी। तशरीफ रखिये।

अफजल खान – (धूर्त मुस्कान चेहरे पर लाते हुए।) सही कहा तुमने, शाहजी तो मेरे दोस्त हैं। इस नाते तुम मेरे भतीजे हुए। कब से तुमसे मिलने के लिए तड़प रहे थे। आओ हमारे गले से लग जाओ।

(अफजल खान बाहें फैला देता है और शिवाजी उसने सीने से जा लगते हैं। अफजल खान के विशाल शरीर से लगे शिवाजी का मस्तक उसके कंधे तक ही आ पाया है। अफजल खान शिवाजी के गले

को अपनी बाहों में कस लेता है। कसावट बढ़ने लगती है। शिवाजी के चेहरे पर चिंता की लकीरें नजर आती हैं। वे कसमसाकर स्वयं को उसकी गिरफ्त से छुड़ाने का प्रयास करते हैं लेकिन अफजल खान का शिकंजा उनके चारों ओर कसता ही चला जाता है।

उनकी साँस घुट रही है। वे छटपटा रहे हैं। तभी शिवाजी को अपनी पीठ पर किसी चोट की आवाज महसूस होती है। वे आँखें घुमाकर देखते हैं कि अफजल खान ने अपने हाथ में खंजर ले रखा है।

शिवाजी चीते सी फुर्ती के साथ अपने बघ नखे वाले बाएँ हाथ को मुक्त करते हैं और उसे अफजल खान के पेट पर दे मारते हैं। बघनखे में फँसकर अफजल खान की आंतड़ियाँ बाहार निकल आती हैं।

अफजल खान भी उन पर वार करने की कोशिश करता है लेकिन शिवाजी बिछुआ भी उसके पेट के भीतर उतार देते हैं। शिविर में खून ही खून हो जाता है। मांस के लोथड़े दिखाई देते हैं और एक चीत्कार सुनाई देती है। तम्बू में अफरातफरी मच जाती है। शिवाजी बिजली की सी फुर्ती से तम्बू से बाहर आ जाते हैं।)

शिवाजी –(जोर से चिल्लाकर) अफजल मारा गया।

(यह सुनते ही सैयद बंदा लपककर आता है और शिवाजी की गर्दन पर वार करता है। उनका फौलाद का टोपा फट जाता है। इसी बीच जीवा महला सैयद बंदा पर वार करके उसका हाथ काट डालता है और अंत में वह मारा जाता है।)

मंच पर लड़ाई का दृश्य उभरता है। तोपों की आवाजें आती हैं। घमासान युद्ध होता है और अंत में मुगल सेना भाग खड़ी होती है। जय भवानी... हर–हर महादेव का उद्घोष हो रहा है। सैनिक अफजल खान का कटा हुआ सर प्रतापगढ़ के किले पर लटका देते हैं। शिवाजी की विजय का नाद होता है।

सामूहिक नाद – जय भवानी.. हर–हर महादेव।

परदा गिरता है।

– बीकानेर (राजस्थान)

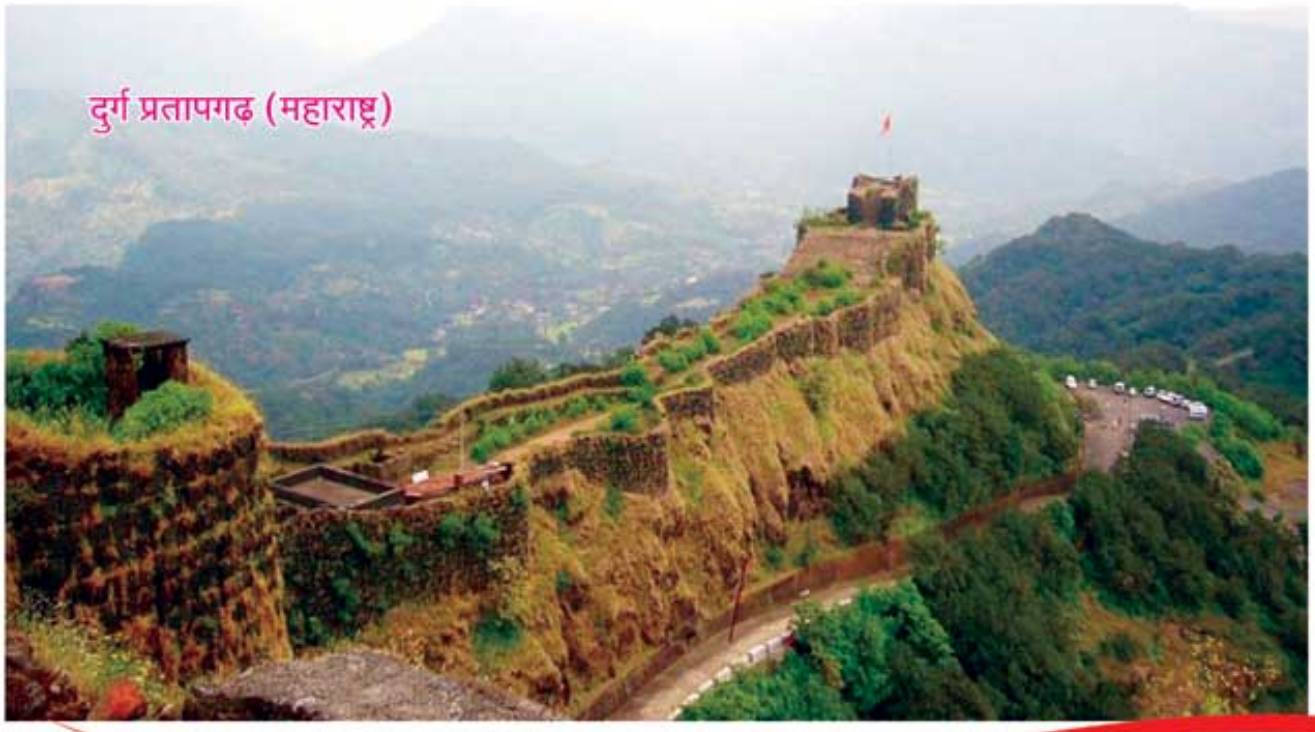
दुर्ग प्रतापगढ़ (महाराष्ट्र)

छत्रपति शिवाजी की सूझबूझ

– ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

स्थान – घर का एक बरामदा की धूप में पूरा दृश्य।

पात्र

पिता – छत्रपति शिवाजी की सेवा का एक वीर सैनिक।

माँ – इस वीर सैनिक की पत्नी।

पुत्र – वीर सैनिक का पुत्र।

पुत्री – वीर सैनिक की पुत्री।

दृश्य – (घर के बरामदे में धूप में बैठी सैनिक की पत्नी उसकी पुत्री की चोटी गूंथ रही है।)

पुत्री – माँ धीरे करो! दर्द होता है। (बालिका मुँह बनाते हुए।)

माँ – मैं तो धीरे ही चोटी गूंथ रही हूँ। थोड़ा तो दर्द होगा ही। (माता उसके माथे पर एक हाथ से झटका देते हुए।) थोड़ी देर तो चुप रहा कर।

पुत्री – वही तो कर रही हूँ।

(माँ चुपचाप चोटी गूंथने लगती है।)

पुत्री – माँ! देखो तो।

माँ – क्या देखूँ? (माँ इधर–उधर देखते हुए।)

पुत्री – नहीं माँ! देखा नहीं। ध्यान से सुनो।

माँ – बेटी! घोड़े की टॉप की आवाज आ रही है।

(पास से घोड़े की टापों की आवाज पहले धीरे–धीरे आती है। और तेजी से बढ़ने लगती है। जैसे घोड़े धीरे–धीरे पास आ रहे हो।)

पुत्री – माँ! लगता है बप्पा आ गए हैं।

माँ – घोड़े की टॉप से तो ऐसा ही लगता है।

पुत्री – माँ! क्या भैया की माँग पूरी हुई होगी?

माँ – पता नहीं बेटी! (माँ ने कहा और ध्यान से टापों की आवाज सुनाने लगी।)

पुत्री – हाँ माँ! ध्यान से सुनो।

माँ – तू सही कहती है पुत्री। यह एक नहीं दो घोड़ों की टॉपों की आवाज आ रही है। (कहते हुए माँ–पुत्री को हाथों से धक्का देकर उठाते हुए कहती है।)

अंदर जा। स्वागत की थाली लेकर आ जा।

(पुत्री कमरे के अंदर जाकर स्वागत का थाल ले आती है। माँ सर पर अपना पल्लू सजाते हुए खड़ी हो जाती है।)

माँ – लो। वे आ गए। (माँ पुत्री के हाथ से थाली ले लेती है।)

पुत्री – हाँ माँ! दोनों के चेहरे खिले हुए हैं।

माँ – लगता है काम बन गया है। (कहकर माँ दो कदम आगे बढ़ती है।) आपका हार्दिक स्वागत है।

पुत्र – हाँ माँ! आपका आशीर्वाद फलीभूत हो गया है। (पुत्र माँ के चरण स्पर्श करता है। तभी माँ के हाथ आशीर्वाद के लिए ऊपर उठ जाते हैं।) तुम अपने पिता की तरह ही इस माटी का नाम रोशन करो।

पिता – आखिर बेटा किसका है? (तभी साथ आया हुआ आगंतुक पिता अपनी मूँछों पर ताव देते हुए कहता है।)

माँ – बहादुर शेर पिता की तरह बहादुर शेर संतान है।

(माँ आगंतुक पिता के तिलक लगा देती है। दोनों चारपाई पर बैठ जाते हैं। किन्तु पुत्र इधर–उधर

घूमता रहता है। वह अधीरता से कहता है।)

पुत्र – माँ! जानती हो माँ दरबार में क्या हुआ था?

माँ – हाँ बेटा! बता, मगर इस चारपाई पर बैठकर।

पुत्री – हाँ भैया! बताओ ना, वहाँ क्या हुआ था?

पुत्र – जानती हो माँ! जब हम दरबार में पहुँचे तब क्या हुआ?

माँ – क्या हुआ मेरे शेर! बता तो।

पुत्र – महाराज छत्रपति शिवाजी महाराज ने मेरी ओर देखकर कहा– ''इस बालक के मुख से एक आलौकिक तेज झलक रहा है।''

माँ – अच्छा बेटा! हमारे प्रिय महाराज ने ऐसा कहा था।

पुत्र – हाँ माँ! मुझे कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। महाराज शिवाजी ने कहा– ''बोलो वीर पुत्र! क्या चाहिए?''

माँ – अच्छा! उन्हें स्वयं ही पता चल गया कि तुम कुछ माँगने आए हो?

पुत्र – हाँ माँ! महाराज छत्रपति शिवाजी जितने बहादुर, वीर और कुशल शासक हैं उतने ही दूसरे की मंशा पकड़ने में माहिर हैं। (कहते हुए पुत्र ने अपनी बहन की ओर देखा। वह अपलक अपने भाई को निहारे जा रही थी।)

माँ – फिर?

पुत्र – मैंने कहा– ''महाराज छत्रपति शिवाजी की जय हो। वे सदा विजयी रहे!'' जिसे सुनकर महाराज छत्रपति शिवाजी मुस्कुरा दिए।

माँ – अच्छा!

पिता – (कब से चुपचाप बैठे हुए) ''सत्य कहता है हमारा पुत्र।''

माँ – फिर क्या हुआ?

पुत्र – मैंने कहा– ''महाराज आपका हौसला बुलंद हो। मुझ नाचीज को एक उम्दा किस्म का घोड़ा चाहिए।''

माँ – फिर?

पुत्र – फिर क्या माँ! दरबार में सन्नाटा छा गया। इस वक्त एक मंत्री ने खड़े होकर कहा– ''गुस्ताखी माफ हो हुजूर?''

माँ – फिर?

पुत्र – तभी छत्रपति शिवाजी महाराज ने कहा– ''बोलिए मंत्रीजी! क्या कहना चाहते हो?'' तब मंत्रीजी ने कहा– ''महाराज! एक बालक को घोड़ा देने में घोड़े की क्या उपयोगिता रहेगी?''

माँ – फिर क्या हुआ बेटा?

पुत्र – तब कुछ देर दरबार में सन्नाटा छाया रहा। तब छत्रपति शिवाजी महाराज ने मेरी ओर देखा– ''वीर बालक इस बारे में तुम्हारी राय क्या

है?'' (कहते हुए बालक पिताजी के पास खड़ा हो गया।) – पिताश्री! यही हुआ था न?

पिता – हाँ पुत्र! कहते रहो। बहुत ठीक कह रहे हो।

पुत्र – तब माँ मैंने कहा– महाराज की जय हो। यदि मंत्रीवीर घोड़े की उपयोगिता जानना चाहते हैं तो मुझसे तलवार के दो–दो हाथ कर लें। तब उन्हें पता चल जाएगा कि मेरे लिए इस घोड़े की क्या उपयोगिता है?

माँ – अच्छा! फिर?

पुत्र – फिर क्या माँ! वह मंत्री यही चाहता था। वह तलवार लेकर मेरे पास आ गया और कहा– ''चलो बालक! तुम्हारी इस इच्छा को पूरी कर देता हूँ।'' कहकर वह इस तरह खड़ा हो गया जैसे किसी नादान बालक के सामने खड़ा हो।

माँ – फिर क्या हुआ पुत्र?

पुत्र – होना क्या था माँ! मैंने इस तरह तलवार

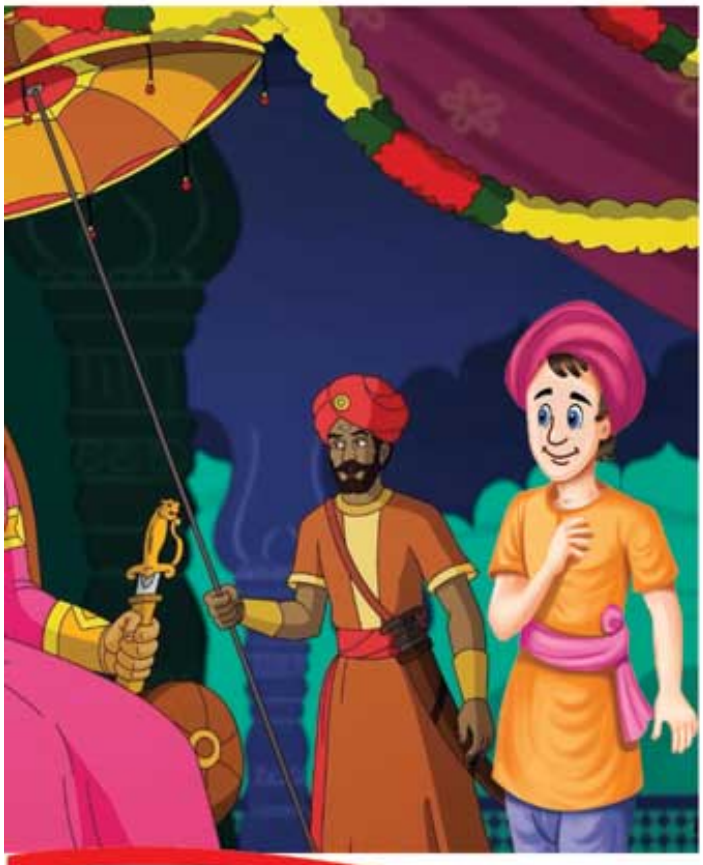

चलाई कि वह चकित रह गया। तब वह सावधान होकर तलवार चलाने लगा। उसने कई दाँवपेंच चले। ताकि मुझे धूल चटा सके।

माँ – फिर?

पुत्र – फिर क्या था माँ! दरबार व छत्रपति शिवाजी महाराज भी मेरे तलवार कौशल को देखते रह गए। मंत्रीवर ने हारता देखकर अपना पैंतरा दिखाने की कोशिश की। किन्तु उनके सब पैंतरे विफल हो रहे थे।

पुत्री – फिर क्या हुआ भैया?

पुत्र – होना क्या था बहन! मैंने उसकी नजर बचाकर तलवार का एक पैंतरा लगाया। तलवार सीधे दोनों पैर के बीच से होकर कमर की ओर जाने लगी। यह देखकर उसके होश उड़ गए। तब मैंने तलवार पैर के ऊपर जोड़ के पास ले जाकर रोक दी। (कब से चुप बैठे पिता ने कहा।)

पिता –भाग्यवान! वह दृश्य देखने लायक था। दरबार तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज रहा था। महाराज छत्रपति शिवाजी अपने सिंहासन से उठकर आ नीचे आ गए।

माँ – फिर?

पुत्र – उन्होंने आते ही मुझे अपने सीने से लगा लिया। शाबाश! मेरे वीर बालक! तुमने अपनी उपयोगिता सिद्ध कर दी है। हमारे मंत्रीवर को हरा दिया।

माँ – अच्छा! उन्होंने ऐसा कहा।

पुत्र – हाँ माँ!

पुत्री – अच्छा भैया!

पुत्र – हाँ बहन।

माँ – फिर?

पुत्र – फिर मैंने कहा – ''महाराज! मंत्रीवर

हारे नहीं हैं। उन्होंने मुझे जीता दिया।'' तब महाराज ने चौक कर कहा– ''क्या मतलब है वीर बालक आपका?''

माँ – हूँ!

पुत्र – फिर मैंने कहा – ''महाराज! मंत्रीवर का अभ्यास छूटा हुआ है। इस कारण उन्होंने मुझे जितने दिया। अन्यथा मैं कभी नहीं जीतता।''

माँ – अच्छा!

पुत्र – हाँ माँ! तब महाराज छत्रपति शिवाजी ने कहा– ''बेटा! तुम बहादुर नहीं बल्कि बुद्धिमान बालक भी हो।'' तब सभी मंत्री जोर से बोल पड़े– ''वीर बालक की जय हो।''

माँ – अच्छा!

पुत्र – हाँ माँ! यह कहते हुए छत्रपति शिवाजी ने कहा– ''यदि धरती पर सभी लाल इसी तरह बुद्धिमान व बहादुर हो जाएँ तो यह देश कभी गुलाम नहीं हो सकता।''

(माँ यह सुनकर गर्व से खड़ी हो जाती है।)

माँ – आखिर लाल किसका है?

पुत्री – मेरा भैया!

पिता – ऐसा पुत्र सबको मिले। ताकि सब माता–पिता उस पर गर्व कर सके।

(यह सुनकर सभी खिलखिला कर हँस पड़ते हैं और पर्दा गिर जाता है।)

– नीमच
(मध्य प्रदेश)

किशोर शिवाजी का संकल्प

– राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव

पात्र

पंद्रह वर्षीय किशोर – वीर शिवाजी।

कान्होजी जेधे, बाजी पासलकर, तानाजी माळुसरे, सूर्याजी माळुसरे, येसाजी कंक, सूर्याजी काकड़े, बापूजी मुद्गल, नरसप्रभु गुप्ते, सोनोपंत डबीर। सभी की वेशभूषा मावली युवा सरदारों के अनुरूप। घने जंगल के बीच सह्याद्रि पहाड़ी पर रायरेश्वर महादेव मंदिर। नेपथ्य में सांय–सांय करती हवा और पक्षियों का कलरव का स्वर।

मंच पर एक ओर से कान्होंजी जेधे, बाजी पासलकर और तानाजी माळुसरे हाँफते हुए धीरे–धीरे आते हैं। ऊँची पहाड़ी पर चढ़कर आने से तीनों की साँसें फूली हुई हैं।

कान्होजी जेधे – पासलकरजी, आखिरकार हम लोग सह्याद्रि पहाड़ी के शिखर पर आ ही गए।

बाजी पासलकर – (साफे के छोर से मुँह पर आया पसीना पोंछते हुए) हाँ कान्होजी, आ तो गए। किन्तु आते–आते ही सांस फूल गई।

तानाजी माळुसरे – (एक चट्टान पर बैठते हुए) पासलकरजी यह स्थान समुद्रतल से लगभग ४७०० फीट की ऊँचाई पर है। अब इतनी ऊँचाई पर आएँगे तो सांस तो फूलेगी ही।

बाजी पासलकर – सरदार तानाजी! सही कहा आपने। किन्तु यहाँ की हरियाली और मनोरम दृश्य देखकर सारी थकान मिट गई।

कान्होजी जेधे – वीर शिवाजी भी आ ही रहे होंगे। ऐसे साहसी, वीर और बुद्धिमान का नेतृत्व पाकर हम धन्य हो गए।

बाजी पासलकर – सचमुच बहुत साहसी हैं शिवाजी महाराज। तुमने वह घटना तो सुनी ही होगी?

कान्होजी जेधे – कौन सी घटना?

बाजी पासलकर – अरे वही! वीर शिवाजी जब अपने पिताजी के साथ बादशाह के दरबार में गए थे।

तानाजी माळुसरे – तो क्या हुआ। दरबार में जाना कोई बड़ी बात तो नहीं है।

बाजी पासलकर – पूरी बात तो सुनो तानाजी। दरबार में पहुँचकर जब इनके पिताजी ने इनसे कहा कि बादशाह को झुककर सलाम करो। तो वीर शिवाजी ने मना कर दिया।

तानाजी माळुसरे – क्यों? मना क्यों कर दिया?

बाजी पासलकर – वीर शिवाजी ने छाती चौड़ी और सिर ऊँचा करके कहा कि – ''ये हमारे राजा नहीं हैं। मैं इन्हें न प्रणाम करूँगा और न ही सलाम करूँगा।'' अब आज तो वीर शिवाजी पंद्रह–सोलह वर्ष के हो गए। लेकिन उस समय तो उनकी आयु मात्र आठ या नौ वर्ष की ही रही होगी।

(इसी बीच सूर्याजी माळुसरे, येसाजी कंक और सूर्याजी काकड़े भी हाँफते हुए आ जाते हैं।)

तानाजी माळुसरे – सचमुच ऐसा साहस तो केवल वीर शिवाजी ही दिखला सकते हैं। अन्याय और अत्याचार उनसे बिलकुल सहन नहीं होता।

सूर्याजी माळुसरे – (येसाजी कंक के कंधे पर हाथ रखते हुए।) और वह गायों वाली घटना तो अभी भी चर्चा में है।

तानाजी माळुसरे – कहीं वह कसाई वाली घटना तो नहीं?

सूर्याजी माळुसरे – हाँ वही तो। कुछ विधर्मी गाय को जबरन घेरकर ले जा रहे थे। उसे रोकने–

टोकने की किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी।

येसाजी कंक – फिर क्या हुआ?

सूर्याजी काकड़े – मैं बताता हूँ। तभी कहीं से शिवाजी आए। उन्होंने तलवार से उन विधर्मियों का काम तमाम कर सभी गायों को उनके चंगुल से मुक्ति दिलाई।

येसाजी कंक – मेरे पास के गाँव में भी आदिलशाह के सैनिक कुछ युवतियों का अपहरण कर ले जा रहे थे। शिवाजी को सूचना मिली तो वे तुरंत वहाँ पहुँच गए। और उन सैनिकों को मार भगाया। (कुछ पल रुककर) लेकिन वीर शिवाजी अभी तक आए क्यों नहीं?

तानाजी माळुसरे – (एक ओर अँगुली से इशारा करते हुए) वो देखो! हमारे सरदार वीर शिवाजी पहाड़ी की चढ़ाई चढ़ते हुए चले आ रहे हैं। (सब उसी ओर देखने लगते हैं।)

येसाजी कंक – हाँ! उनके साथ बापूजी मुद्गल, नरसप्रभु गुप्ते और सोनोपंत डबीर भी हैं।

सूर्याजी काकड़े – आपने सही पहचाना। (अगले ही पल वीर बालक शिवाजी अपने तीनों साथियों सहित मंच पर आते हैं।)

शिवाजी – सभी साथियों का स्वागत, हर-हर महादेव। सभी एक साथ (उच्च स्वर में) हर-हर महादेव..... जय रायरेश्वर।

सोनोपंत गुप्ते – मित्रों! हमारे सरदार आज आप सभी से महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा करना चाहते हैं। कृपया आप सभी स्थान ग्रहण करें। (सभी सरदार आसपास की छोटी-छोटी चट्टानों पर बैठ जाते हैं।)

बापूजी मुद्गल – (शिवाजी से) – अब मैं वीर शिवाजी महाराज से अनुरोध करता हूँ, कि वे अपने मन की बात और अपनी आगामी योजना हमारे साथ साझा करने का कष्ट करें। (शिवाजी एक बार सभी की ओर क्रमश: देखते हैं और फिर धीर-गंभीर स्वर में बोलना प्रारंभ करते हैं।)

शिवाजी – वीर साथियो! अपने देशवासियों की दुर्दशा देखकर मैं बहुत विचलित हूँ।

सोनोपंत – (शिवाजी से) क्यों ऐसा क्या हुआ शिवाजी राजे?

(शिवाजी क्रोध में उठकर खड़े हो जाते हैं। क्रोध से उनका चेहरा तमतमाने लगता है। शिवाजी के खड़े होते ही सभी साथी भी खड़े हो जाते हैं।)

शिवाजी – (सोनोपंत के दोनों कंधों पर हाथ रखकर उसकी आँखों से आँखें मिलाकर) – पूछते हो क्या हुआ? क्या इस आदिलशाही हुकूमत में हम पर जो अत्याचार हो रहे हैं, वह तुम्हें विचलित नहीं करते? (सोनोपंत अपना सिर झुका लेता है।)

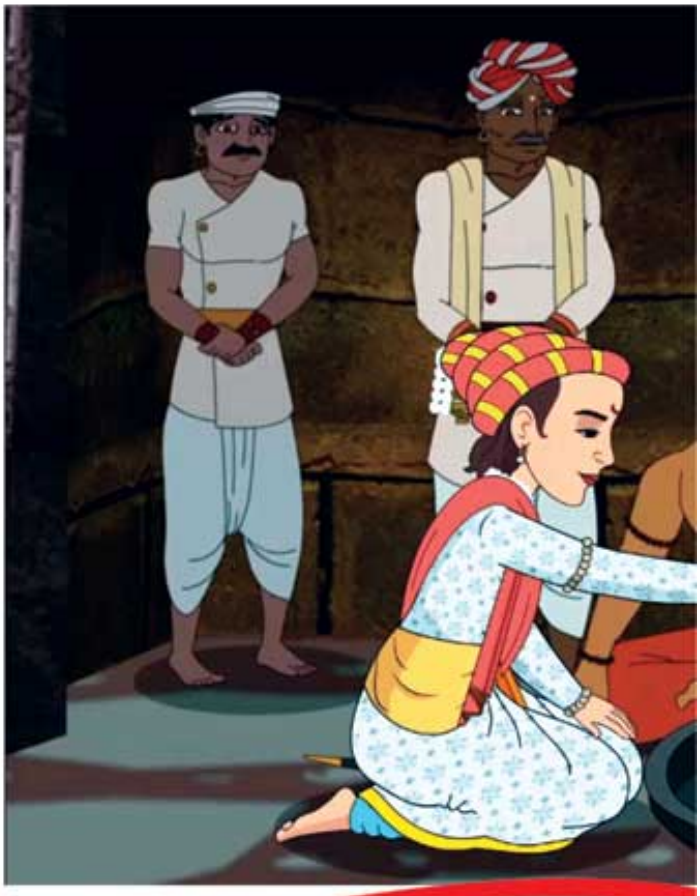

शिवाजी – (आगे बढ़कर नरसप्रभु गुप्ते के पास पहुँचकर उससे पूछते हैं) – नरसप्रभु क्या तुम्हें भी नहीं दिखता कि इस आदिलशाही हुकूमत में हमारी माता–बहिनों का घर से निकलना दूभर हो गया है। (नरसप्रभु भी सिर झुका लेता है।)

शिवाजी – (बापूजी मुद्गल से) – तुमने तो आदिलशाह के सिपाहियों का अपने गांव के किसानों पर जुल्म अपनी आँखों से देखा है। लोगों के घर में अनाज, धन, गाय–बकरी सब लूटकर ले जाते हैं कि नहीं? बोलो। (बापूजी मुद्गल भी क्रोध में तमतमाकर रह जाता है।)

शिवाजी – (सूर्याजी काकड़े और येसाजी के कंधे पर हाथ रखकर) – और तुम दोनों के गाँव के मंदिर में सरेआम घुसकर पवित्र मूर्तियों को खंडित भी तो इन्हीं विधर्मियों ने किया था। क्या तुम दोनों भूल गए? (वे दोनों भी सिर झुका लेते हैं।)

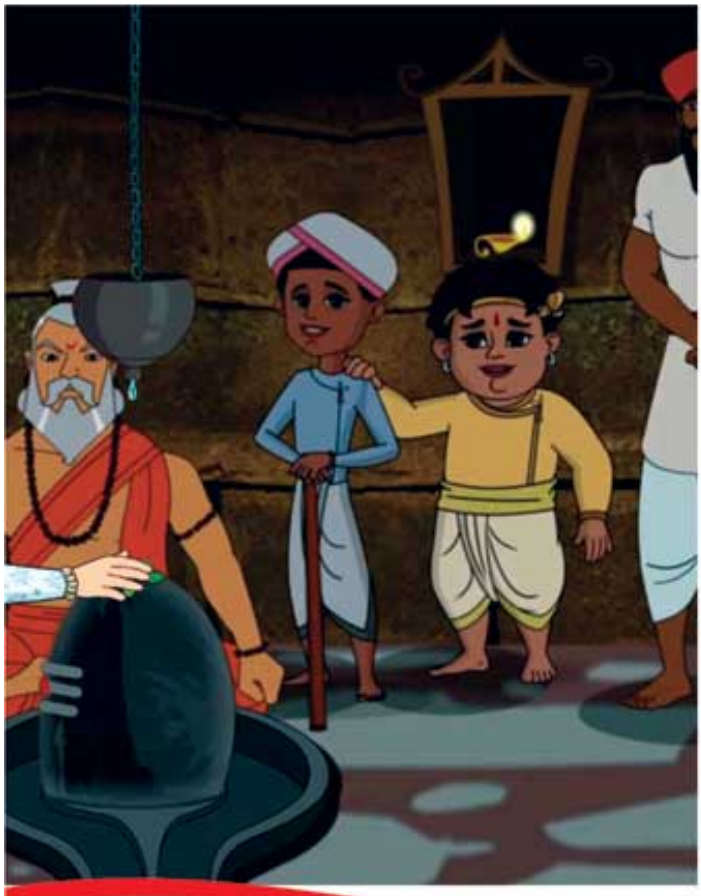

शिवाजी – (तानाजी और कान्होजी से) – और तुम दोनों भी जानते हो तुम्हारी गायों को यही म्लेच्छ सबकी आँखों के सामने खोलकर ले गए थे। क्या हमारी गोमाता हमारे ही सामने कटती रहेगी? बोलो? (इन दोनों का चेहरा भी क्रोध से लाल हो जाता है। लेकिन दोनों चुप रहते हैं।)

शिवाजी – (कान्होजी जेधे, बाजी पासलकर और सूर्याजी माळुसरे से) – तुम्हीं बताओ! कुछ जागीरों के लोभ में और इनकी तलवार के भय से इन आतताइयों को हम कदम–कदम पर कब तक सलाम बजाते रहेंगे। हम अपना स्वाभिमान गिरवी रखते रहेंगे? क्या हमारी मातृभूमि हमें धिक्कारती नहीं होगी? बोलो? (इन तीनों को भी गुस्सा तो आता है, लेकिन वे तीनों भी चुप रह जाते हैं।)

शिवाजी कुछ देर मौन रहकर सभी को देखते हैं। फिर कहते हैं।

शिवाजी – तुम सब भले ही चुप बैठे रहो। लेकिन मैं चुप नहीं बैठूँगा। मैं अकेला ही इस आदिलशाही सल्तनत का सामना करूँगा।

कान्होजी जेधे–(शिवाजी से) राजे शिवाजी! आप अकेले नहीं हैं। हम सब आपके साथ हैं।

सभी एक साथ – हाँ शिवाजी! हम सभी आपके साथ हैं।

तानाजी – (शिवाजी से) आप हमारे सरदार हैं। आप हमें आदेश करें, हमें क्या करना है।

शिवाजी – साथियो! सबसे पहले तो हमें संगठित होना होगा। जन–जन के मन में स्वाभिमान की आग जलानी होगी। सबके कानों में स्वराज्य का मंत्र फूँकना होगा। सबको समझाना होगा कि डर–डरकर जीने से तो जूझकर मर जाना अच्छा है।

सूर्याजी माळुसरे – राजे शिवाजी महाराज!

हम सब आपके बताए मार्ग पर चलने को तैयार हैं।

शिवाजी – साथियों मेरा तो एक ही लक्ष्य है, एक ही स्वप्न है। वह है हिंदवी स्वराज्य।

येसाजी – (शिवाजी से) – यह हिंदवी स्वराज्य कैसा होगा ?

शिवाजी – हिंदवी स्वराज्य मतलब हम हिंदुस्थानियों, हम हिंदुओं का अपना राज। जहाँ सबके अधिकार और स्वाभिमान का सम्मान होगा। जहाँ धर्म, नारी, गाय, गरीब और ब्राह्मण पर आँच नहीं आने दी जाएगी। जहाँ किसान और मजदूर का शोषण नहीं होगा। जहाँ उन्नति के समान अवसर होंगे। मातृभूमि का जयगान होगा।

बाजी पासलकर – सचमुच हिंदवी स्वराज्य हमारे लिए स्वर्ण युग होगा। शिवाजी आपकी यह इच्छा अवश्य पूर्ण होगी।

शिवाजी – बाजी भाऊ! यह मेरी ही नहीं बल्कि भारत भूमि की कामना है। यह मान लो कि स्वयं महादेव की इच्छा है।

कान्हाजी जेधे – राजे शिवाजी! आपके इस पुनीत संकल्प में हम सब भी आपके साथ हैं।

शिवाजी – यदि सचमुच आप मन वचन से मेरे साथ हैं, तो आइए! हम अपने आराध्य महादेव रायरेश्वर के समक्ष एक साथ संकल्प लें। मैं गाँव–गाँव पहुँचकर यह संकल्प सबको दिला रहा हूँ।

सभी एक साथ – हाँ हाँ चलो। हम भी एक साथ संकल्प लेंगे।

(सभी एक साथ रायरेश्वर महादेव के मंदिर में पहुँचकर शिवलिंग के समक्ष संकल्प लेते हैं।)

पहले शिवाजी कहते हैं। शेष सभी शिवाजी के संकल्प को दोहराते हैं।

भगवान रायरेश्वर महादेव की इच्छा मानकर, हम सभी संकल्प लेते हैं, कि आदिलशाही हुकूमत को उखाड़ने और हिंदवी स्वराज्य की स्थापना के लिए, हम संगठित रहकर, आखिरी साँस तक विधर्मियों से संघर्ष करते रहेंगे। संकल्प लेने के पश्चात सभी मंदिर से बाहर आते हैं।

शिवाजी – साथियो! अब हम विदा लेते हैं। लेकिन हमेशा हम एक–दूसरे के संपर्क में रहेंगे। मेरे साथ बोलिए, रायरेश्वर महादेव की जय।

सभी एक साथ – जय जय जय।

शिवाजी – मावल प्रांत की जय।

सभी एक साथ – जय जय जय।

शिवाजी – भारतभूमि की जय।

सभी एक साथ – जय जय जय।

कान्हाजी जेधे – राजे शिवाजी महाराज की जय।

सभी एक साथ – जय जय जय।

पर्दा गिरता है।

– विदिशा (म. प्र.)

दुर्ग रायरेश्वर (महाराष्ट्र)

स्वराज्य सेवक शिव छत्रपति

– गोपाल माहेश्वरी

पात्र परिचय

प्रमुख पात्र

पंडित गंगा भट्ट – काशी के महापंडित।

शिवाजी – हिंदवी स्वराज्य के संस्थापक राजा।

जीजाबाई – शिवाजी की माता।

उपाध्याय – शिवाजी के राज पुरोहित।

सहायक पात्र

गंगा भट्ट जी के दो शिष्य।

सोयराबाई – शिवाजी की पत्नी।

संभाजी – शिवाजी के पुत्र।

अन्य पात्र

नागरिक, सभासद, महिलाएँ, सेवक सेविकाएँ, कहार, शिवाजी के मंत्रीमंडल के लोग।

कालखंड

ईस्वी सन् १६७४ ग्रीष्म ऋतु।

स्थान – रायगढ़ (महाराष्ट्र)

दृश्य – एक

(हंसों के पंखों के समान सफेद धोती, वैसा ही उत्तरीय, शीश पर पगड़ी, पैरों में लकड़ी की बनी खड़ाऊ, वक्ष पर रुद्राक्ष की माला और बाजुओं पर रुद्राक्ष के ही भुजबंध, कलाई पर स्वर्ण का कड़ा, मस्तक पर चंदन का सुंदर त्रिपुण्ड्र, अधेड़ आयु, तेजस्वी मुखमंडल, प्रभावशाली व्यक्तित्व मुख पर चिंता के भाव लिए पंडित गंगा भट्ट अपने दो शिष्यों के साथ चले जा रहे हैं।)

पंडित गंगा भट्ट – हे विश्वनाथ! शिव शंभो! यह राष्ट्र आपका ही स्वरूप हैं। इस पर सनातन हिन्दू धर्म की ऐसी दुर्दशा कब तक सहोगे नाथ? कोई तो इस देश में पुनः राष्ट्रधर्म की प्रतिष्ठा करें। भारत भूमि, अवतार भूमि, देव भूमि, पुण्य भूमि, इसे अपवित्र करते म्लेच्छों को कौन निवारित करेगा प्रभो?

एक शिष्य – गुरुदेव! आप तो विद्वत्ता में कलियुग के नव बृहस्पति ही हैं। वंश परिचय पूछिए तो आपके पूर्वज विजयनगर साम्राज्य के निवासी रहे। जब इस साम्राज्य का पतन हुआ तो वहाँ के अनेक विद्वानों के साथ आपके परदादा श्री रामेश्वर भट्ट भी उत्तर भारत में, विद्या के सबसे बड़े केन्द्र काशी आ गए। उनके पुत्र श्री नारायण भट्ट ने ही तब काशी विश्वनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया था।

दूसरा शिष्य – किन्तु अपने दादाजी के द्वारा पुनः निर्मित ज्योतिर्लिंग विश्वेश्वर के दिव्य देवालय का औरंगजेब के आदेश से विध्वंस अपनी आँखों से देखने वाले, आप महापंडित शास्त्र–धुरंधर गंगा भट्ट श्री दिवाकर भट्ट के सुपुत्र ऐसे परम विद्वान होकर भी इतने विचलित ऐसे चिंतातुर कहाँ जा रहे हैं गुरुदेव?

पंडित गंगा भट्ट – भारतवर्ष की महान संस्कृति की ऐसी दुर्दशा देखकर तो हिमाचल भी विचलित हो रहा होगा वत्स! मैं तो फिर विश्वेश्वर का एक छोटा–सा सेवक मात्र हूँ। (उत्तरीय से आँखों में भर आए अश्रु पोंछते हैं।)

दूसरा शिष्य – क्या इस पतन तो रोकने का कोई उपाय शेष नहीं है? मैंने नहीं देखा कभी कि धर्म पर संकट हो और आपको समाधान न मिले। स्पष्ट कुछ नहीं। मेरा मन कह रहा है इस घोर विपत्ति का समाधान खोजने के लिए विश्वेश्वर मुझे ही माध्यम बनाना चाहते हैं। इसीलिए तो चल पड़ा हूँ काशीपुरी से...।

पहला शिष्य – कहाँ गुरुदेव! आपने गंतव्य बताया नहीं?

दूसरा शिष्य – क्षमा करें गुरुदेव! आज्ञा हो तो पूछूँ। एक संशय है। हम शास्त्र साधक लोग, शस्त्रधारी विधर्मियों का निवारण कैसे कर सकेंगे?

पहला शिष्य – गुरुदेव! यह प्रश्न तो मेरे मन में उठा हैं।

पंडित गंगा भट्ट – तुम्हारे संशय स्वाभाविक ही हैं लेकिन मुझे शिव–शंभु की कृपा से यह समाचार मिला है कि, सह्याद्रि की कोख से एक परमप्रतापी, देव, देश व धर्म का अभिमानी वीर उदित हुआ है। जिसने सागर पर्यंत अकेले चार–चार विधर्मी सल्तनतों का घमंड चूर कर, प्रचण्ड वीरता और अदम्य साहस से, दक्षिणी भारत के विशाल भूभाग पर स्थित दुर्ग–दुर्ग पर भगवा ध्वज फहरा दिया है। गौ ब्राह्मण प्रतिपालक, माता–पिता, गुरु और संतों के चरणों का अटल अनुरागी वह है, शिवाजी राजे भोंसले।

पहला शिष्य – (उत्सुकता से) वे कहाँ के सिंहासनाधीश हैं गुरुदेव?

पंडित गंगा भट्ट – वे अभी तो किसी सिंहासन पर नहीं विराजते, न ही उनके पूर्वज कभी विराजे। (पंडित जी के त्रिपुंड्रमंडित भाल पर चिंता रेखाएँ उभरती है।)

दूसरा शिष्य – तो उनका ऐसा प्रबल पराक्रम कैसे क्रियान्वित होता है गुरुदेव?

पंडित गंगा भट्ट – स्वराज्य के सेवक बनकर।

पहला शिष्य – क्या हम उन्हीं से भेंट करने जा रहे हैं?

पंडित गंगा भट्ट – हाँ! हम उन महापुरुष की पावन कर्म भूमि पर ही जाकर मिलेंगे रायगढ़। लेकिन अब अधिक वार्तालाप कर, गति कम न होने दो शेष सब वहाँ जाकर ही स्पष्ट होगा।

दोनों शिष्य – (एक साथ) जो आज्ञा आपकी (शीघ्रता से चलने लगते हैं) दृश्य परिवर्तन होता है।

दृश्य – दो

(काशी से चलकर पंडितराज गंगा भट्ट नाशिक तक पहुँचे हैं। शिवाजी ने अपने विद्वान उपाध्याय के साथ पालकी और अश्व भेजकर, राजसी सम्मान सहित अगवानी करने आ रहे हैं। महाराष्ट्रीय राजसी पंडित की राजसी वेशभूषा में सजेधजे उपाध्याय, साथ में और भी पंडितगण और सेवक। कहार खाली पालकी उठाए आते हैं। दूसरी ओर से गंगा भट्ट का दोनों शिष्यों सहित मंच पर प्रवेश)

उपाध्याय – (अभिवादन करते हुए) स्वागतम् स्वागतम् महापंडित परम आदरणीय श्री गंगा भट्ट जी को शिवाजीराजे का यह प्रतिनिधि सादर नमन कर रहा है। आपके आगमन से स्वराज्यभूमि और भी पावन हुई है।

पंडित गंगा भट्ट – जय शिवशंभो! आपको भी प्रति अभिवादन विप्रवर! आपकी विनम्रता और शिष्टता बता रही है कि श्रीमंत शिवाजी राजे वास्तव में वैसे ही हैं जैसा सुना है।

उपाध्याय – (उत्सुकता से) ये तो आपकी उदारता है पंडितवर! लेकिन आपने कब व क्या सुन लिया! आइए, कुछ मिष्ठान्न, फलाहार आदि स्वीकार करते कुछ पल विश्राम करते हुए बताएँ। (एक स्थान पर दो चौकियों पर बैठने की व्यवस्था है, दोनों बैठते हैं। बीच में फल, मिष्ठान्न और दूध आदि रखे हैं।)

पंडित गंगा भट्ट – हम काशी से यहाँ आते हुए

महाराष्ट्र की सीमा में प्रवेश के साथ ही स्थान-स्थान पर जनता का अभिनंदन स्वीकारते उन्हें सद्धर्म परायण रहने का आशीर्वाद देते रायगढ़ आए। जन-जन से मिली प्रशंसाओं, सुव्यवस्थाओं को प्रत्यक्ष देखते, सर्व सामान्य समाज के शिवाजी के प्रति पूर्ण आश्वस्त हो चुके हैं।

उपाध्याय – हृदय की बात कहूँ पंडित जी! सारे भारतवर्ष में जैसा हाहाकार मचा है शिवाजी राजे ही हम संस्कृति आराधकों, देवधर्म अनुयायियों के आशा केंद्र हैं। उनकी तलवार में सचमुच साक्षात् भवानी विराजती हैं।

पंडित गंगा भट्ट – (उठते हुए) तो विलंब क्यों विप्रवर! हमारी उनसे शीघ्र भेंट करवाइये। यह भोजन, अल्पाहार, विश्राम में बिताने का समय नहीं है अभी, पहले राजे से भेंट, उनकी मातुश्री के दर्शन पश्चात् जो शिवशंभो की प्रेरणा। (शीघ्रता से प्रस्थान, दृश्य परिवर्तन)

दृश्य – तीन

(रायगढ़ का एक सुसज्जित कक्ष, श्वेत वस्त्रधारी माता जीजाबाई, पंडित गंगा भट्ट एवं शिवाजी राजसी चौकियों पर बैठे चर्चा कर रहे हैं।)

पंडित गंगा भट्ट – स्वराज्य को चिरकाल स्थापित रखने, समुचित विस्तार और सुयोग्य सम्मानित रीति से

संचालित करने हेतु राजे को सिंहासनाधीश होना ही चाहिए। यही परमेश्वर की इच्छा है और प्रजा की भावना भी। (गंगा भट्ट जी की वाणी में असीम आत्मविश्वास भरा है।)

शिवाजी – (विनम्रतापूर्वक) मैं स्वराज्य का साधारण-सा सेवक, स्वराज्य की सनातन हिन्दू धर्म की, परिवार सदृश प्रजा की राज-दिन प्रत्येक सेवा के लिए तैयार स्वराज्य का मात्र एक सेवकभर हूँ, राजा बनकर सिंहासन पर कैसे बैठूँ? इसकी तो कामना ही नहीं है मन में। आप क्षमा करें, यह आवश्यक नहीं, योग्य भी नहीं। (हाथ जोड़कर खड़े होते हैं।)

पंडित गंगा भट्ट – राजे! आपका विनम्र सेवक भाव प्रशंसनीय है, किन्तु यह भी सोचिए संसार की अन्य राजसत्ताओं में स्वराज्य का यह सिंहासन एकमात्र हिन्दू सिंहासन होगा। आपकी प्रतिष्ठा नहीं भारतवर्ष के स्वधर्म की हिन्दुत्व की प्रतिष्ठा के लिए, हिंदूपद पादशाही की अनिवार्यता है। आप स्वराज्य के निष्काम सेवक हैं और बने रहेंगे, परंतु अधर्मियों-विधर्मियों के अनुशासन, नियंत्रण और निवारण हेतु किसी राजदंडधर्ता, सिंहासनासीन और छत्रपति की आज परम आवश्यकता है। इसलिए मैं मातुश्री से भी निवेदन करता हूँ कि वे शिवाजी राजे को राष्ट्रधर्म मानते हुए राज्याभिषेक आयोजित करने की आज्ञा दें, अनुमति दें।

जीजाबाई – (शिवाजी को बैठने का संकेत करती हैं। शिवाजी बैठ जाते हैं। कुछ पल मौन के बाद जीजा माता धीमे से पंडित गंगा भट्ट जी से कहने लगती हैं।) हमारे वंश में राजपरंपरा तो रही नहीं है, तब...?

पंडित गंगा भट्ट – विश्वेश्वर के आदेश से हम करवाएँगे परंपरा का सूत्रपात। परंपरा का आरंभ भी कहीं से तो होता है। वाग्देवी की प्रेरणा से समस्त संभावित विवादों या अपवादों का समाधान सोचते हुए ही हमने राज्याभिषेक विधि पर शास्त्र सम्मत ग्रंथ ही रच

दिया है। यह सब चिंता छोड़कर इस शुभकार्य के लिए अपनी आज्ञा दें, आशीर्वाद दें, बस यही अपेक्षा है।

जीजाबाई – अब तो कुछ कहना शेष नहीं रहता। जो जगदीश्वर चाहें, जैसी आपकी आज्ञा। (परस्पर अभिवादन के साथ सभी उठते हैं।)

दृश्य – चार

(मंच पर दो मराठे चारण डुगडुगी बजा–बजाकर जनसाधारण को सूचित कर रहे हैं।)

एक – (डुगडुगी की ध्वनि के बाद) सुनो सुनो सुनो! बच्चे, बूढ़े, जवान! सैनिक, व्यापारी, किसान! सुनो सभी दे ध्यान, खोलकर कान, उत्सव है बहुत महान।

आनंद नाम संवत्सर की ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि, शक संवत् १५९६, विक्रम संवत् १७७१, शनिवार, तद्नुसार अंग्रेजी गणना से सन् १६७४ के जून मास का ६ दिनांक, समय काशी के महापंडित महाविद्वान श्री गंगा भट्ट जी ने मुहूर्त निकाला है श्रीमंत शिवाजी राजे के राज्याभिषेक का। संपूर्ण स्वराज्य में आनंद का महा अवसर हैं। देश, धर्म, देव, गो, प्रतिपालक श्रीमंत शिवाजी शहाजी राजे भोंसले अब हिन्दू पद पादशाही की स्थापना कर छत्र सिंहासन से सुशोभित होंगे। सभी तैयारियों में अपनी योग्यता और सामर्थ्य के अनुसार सहयोग करें। सुनो सुनो सुनो! (फिर डुगडुगी बजती है।) जनता हर्ष–विभोर नाचने लगती हैं। परस्पर उत्साहपूर्ण हलचल और कोलाहल)

दृश्य – पाँच

(राजभवन में धार्मिक विधियों का समस्त प्रबंधन स्थानीय विद्वान पुरोहित गण पंडित, गंगा भट्ट जी के निर्देशन में कर रहे हैं। पवित्र सप्तसरिताओं और तीर्थों के जल, पवित्र, समिधाएँ, पंच पल्लवादि पूजा की समस्त सामग्रियाँ एकत्र की जा रहीं हैं।

एक ओर शिवाजी राजपरिवार और सभी पदाधिकारियों के लिए विशेष पोशाकें, आभूषण बनकर तैयार हो रहे हैं। दूसरी ओर राज सिंहासन व राज सभा का पूर्ण शास्त्रोक्त विधि से निर्माण हो रहा है। पीछे पर्दे पर जगदीश्वर का भव्य देवालय निर्माण दिख रहा है।)

(तीन चार नागरिकों में वार्तालाप)

एक – अरे! रायगढ़ में तो जैसे रात ही नहीं होती भैया! रात–दिन कहीं तालाब, कहीं कार्यशाला कहीं अतिथियों के आवास बनाए जा रहे रहे हैं।

दूसरा – क्यों नहीं होगा भाई! दूर–दूर से अनेक राजा, व्यापारी, सेनानायक जो आने वाले हैं। हमारे राजे के राज्यारोहण समारोह में।

तीसरा – जगदीश्वर के मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ है जानते हो देवालय के द्वार पर ही क्या अंकित है?

पहला व चौथा – क्या अंकित है? क्या अंकित है भाई? हमें भी बताओ।

दूसरा – हाँ हाँ मैंने भी पढ़ा है। द्वार पर ही सुंदर लिखावट में पत्थर पर सबसे पहले उकेरा गया है। **'श्री गणपतये नमः'**। (हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर प्रणाम करता है।)

चौथा – नीचे लिखा है।

प्रासादो जगदीश्वरस्य जगतामानंदोऽनुज्ञयया
श्रीमच्छत्रपतेःशिवस्य नृपतेःसिंहासने तिष्ठतः।
शाके षण्णव बाणभूमिगणनादानंद संवत्सरे
ज्योति राजमुहूर्त कीर्ति सहिते शुक्लेश सार्पे तिथौ।।

नौबतखाने के दोनों ओर आक्रामक मुद्रा में गजराज पर आक्रमण करते सिंह बने हुए हैं।

पहला – कल शिवाजी राजे तुळजा भवानी को छत्र चढ़ाने गए। पंढरपुर के विठोबा का दर्शन लिए। कोल्हापुर में देवी आराधना की।

दूसरा – स्वास्थ्य कारणों से गढ़ के नीचे पाचाड़ की हवेली में रह रहीं थीं यह तो सबको पता ही है। लेकिन समारोह के लिए शिवाजी की सर्वस्व साक्षात् जगदंबस्वरूपिणी आई साहेब भी रायगढ़ पर ही पधारी हुईं हैं। चौथा–शिवाजी द्वारा सपरिवार उनको प्रतिदिन

प्रणाम से सारे देवीदेवता स्वयं प्रसन्न हो रहे हैं। आसपास के देवालयों में पूजा–अर्चना की ब्राह्मणों को दक्षिणाएँ और याचकों को दान दिए जा रहे हैं।

तीसरा – सारा स्वराज्य अपने प्रतिपालक के राज्यारोहण के लिए पूरी तरह तैयार है तन से, मन से और धन से भी।

चौथा – जो आमंत्रित हैं फूले नहीं समा रहे हैं अपने सौभाग्य पर जो दूर–दूर बसे हैं आ नहीं पाएँगे अपने–अपने स्थानों पर उत्सव मना रहे हैं।

दृश्य – छः

(मराठी वेषभूषा में सजी महिलाएँ फूल, मालाओं तोरणों को सजाते बातें कर रहीं हैं।)

पहली – लो अपने महाराज के राज्यारोहण का दिन और पास आ गया। ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी को उनका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ है।

दूसरी – अच्छा! तूने यह सुना क्या कि सौभाग्यवती सोयराबाई साहेब से शास्त्र नियमानुसार पुनः विवाह रचाया गया है। महाराज की अन्य रानियों में वे पटरानी बन चुकी हैं।

पहली – संभाजी राजे की आई साहेब अखण्ड सौभाग्यवती सईबाई साहेब नहीं रहीं अन्यथा वे ही पटरानी होतीं।

तीसरी – हाँ बहिन! सही है लेकिन.....

चौथी – आजकल प्रतिदिन कुछ न कुछ मंगलाचार, दान, धर्म हो रहे हैं। एकादशी को महाराज का तुलादान हुआ। स्वर्ण, चाँदी, ताँबे और खांड, कर्पूर, मसाले और फलों से शिवाजी को तोलने का अद्भुत कौतुक सबने देखा, बहत्तर किलो स्वर्ण से तुले थे महाराज! तुली हुई सारी वस्तुएँ दान कर दी गईं। अब तो बस परसों राज्याभिषेक हो जाए।

दृश्य – सात

(पंडित गंगा भट्ट सहायक पुरोहितों को निर्देश दे रहे हैं।)

पंडित गंगा भट्ट – सभी पुरोहितों ने अपने–अपने कार्यों का क्रम समझ लिया होगा, सारी सामग्री

का निरीक्षण भी कर ही लिया होगा। किसी को कोई संदेह, संशय या न्यूनता हो तो पूछ लें। न्यूनता हो तो शीघ्र पूर्ण कर ली जाए। महाराज शिवाजी, महारानी सौभाग्यवती सोयराबाई साहेब और युवराज संभाजी ने कल से व्रत रखा है।

एक पुरोहित – पवित्र सरिताओं और तीर्थों के जल एवं अभिषेक के लिए पंचामृत की सामग्री, औषधीय एवं मंगल प्रदान करने वाले पल्लव, कदली स्तंभ, तोरण, पताकाएँ और वंदनवारें यथा स्थान व्यवस्थित हैं महाराज!

पंडित गंगा भट्ट – उत्तम अति उत्तम! चलिए अब हमें अविलम्ब अभिषेक मंडप में उपस्थित होना चाहिए। आज ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी का यह महा मुहूर्त भारतवर्ष का कभी न भूलने योग्य अवसर बनने जा रहा है। आज का यह ब्रह्म मुहूर्त परतंत्रता के अंधकार को भेद हिन्दू स्वराज्य का प्रखर सूर्योदय सिद्ध होगा। (शीघ्रता से प्रस्थान)

दृश्य – आठ

(मंच पर प्रातःकाल की आरंभिक लालिमा, चिड़ियों का कलरव, सजे–धजे अतिथि राजपुरुष, अधिकारी, नागरिकों की आवाजाही, मंगल वाद्यों की ध्वनि)

उद्घोषणा – सभी सम्माननीय अतिथि अपनी निर्धारित दीर्घा में विराजमान हों। आप सभी का हार्दिक अभिनन्दन हैं। (उद्घघोषणा दुहराई जा रही है और सभी आगंतुक समूह बनाकर अलग–अलग स्थानों से मंच के नेपथ्य में चले जाते हैं।)

(राजसभा का भव्य दृश्य, पहले से ही सभी राजदूत, विप्रगण, श्रेष्ठि वर्ग, पदाधिकारी और स्वराज्य के स्वजन अपने निर्धारित स्थानों पर सजे सँवरे अत्यंत प्रसन्न भाव से विराजमान हैं। मध्य में एक बड़ी–सी स्वर्ण निर्मित रत्न जड़ित चौकी रखी है। महाराज

शिवाजी सभा में पधारते हैं पटरानी सोयराबाई साहेब व युवराज संभाजी राजे भी साथ ही हैं। शंख और तुरही बज उठते हैं। सारी सभा खड़े होकर जय ध्वनि से स्वागत अभिवादन कर रही है।)

सभी – छत्रपति शिवाजी महाराज की जय। महारानी सोयराबाई साहेब की जय। युवराज संभाजी राजे की जय।

(बैठते हैं, महारानी और युवराज भी पास ही बैठते हैं। चौकी की पूर्व दिशा में पेशवा मोरोपंत गौ–घृत से भरा स्वर्ण कलश, दक्षिण दिशा में सरसेनापति हंबीरराव मोहिते गौ–दधि भरा ताम्र कलश, उत्तर दिशा में रघुनाथ पंडित मधुपूरित स्वर्ण कलश और पंडितराव मृत्तिका कलश में तीर्थोदक लिए खड़े हैं। आग्नेय कोण में स्वर्ण मंडित रत्नजड़ित छत्र पंत सचिव अण्णा जी ने थाम रखा है। तो दक्षिण और नैऋत्य दिशा में व्यजन डुलाते त्र्यंबक पंत और सुमंत खड़े हैं। वायव्य और ईशान्य में दत्ताजी तथा नीराजी पंत चंवर डुला रहे हैं।)

पंडित गंगा भट्ट – अभिषेक आरंभ हो।

सामूहिक स्वर – हरि: ॐ स्वस्ति न: इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्ति न: पूषा विश्ववेदा:, स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि: स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु। भद्रं कर्णेभि: श्रुणुयाम देवा:..... (ध्वनि धीरे–धीरे मंद होती है। अमात्यों व मंत्रियों द्वारा हाथों के कलशों से विभिन्न द्रव्य से अभिषेक किया जा रहा है। कुछ समय में अभिषेक पूर्ण हुआ। महाराज पटरानी और युवराज नवीन वस्त्र अलंकार धारण करने मंच के पीछे पधारे।)

दृश्य – नौ

(प्रवेशद्वार के सामने स्वर्ण रत्नादि से सुसज्जित आठ–आठ स्तंभों वाले दो चबूतरे थे। एक पर उत्कृष्ट कलाकारिता का आदर्श, शुभ चिह्नों से युक्त, रत्नोंजड़ित भव्य स्वर्ण सिंहासन रखा है। दूसरे चबूतरे पर राजपरिवार की महिलाएँ विराजित हैं। महाराज का नवीन राजसी पोशाक पहने प्रवेश।)

पंडित गंगा भट्ट – महाराज आपने विधिवत पूजा कर शस्त्र धारण किए हैं, अब पहले कुल देवता को फिर विद्वान ब्रह्म मंडली को प्रणाम करें। पुत्र व पत्नी सहित आई साहेब के चरण छूकर आशीष लें।

(महाराज सोयराबाई व संभाजी को साथ लेकर सबको प्रणाम करते हैं। पार्श्व से निरंतर मंगल वाद्यों की ध्वनि आ रही है। सबको प्रणाम कर वे गंगा भट्ट जी के सामने खड़े हैं।)

पंडित गंगा भट्ट – मंगलमय सुप्रभात में भगवान सूर्यदेव उदयचल पर विराजित होने वाले हैं अब हिन्दू स्वराज्य सूर्य महाराज भी सिंहासन पर विराजित हो यही भगवान विश्वेश्वर, देवगणों, सारी प्रजा व भारत माता की भी इच्छा है।

शिवाजी – (हाथ जोड़कर सिर झुकाते हुए) जैसी आप सब की आज्ञा।

(तालियों की गड़गड़ाहट और जय–जय की ध्वनियों के बीच शिवाजी राजसिंहासन पर आसीन होने बढ़ते हैं। सिंहासन को प्रणाम कर और पूर्वाभिमुख खड़े हो जाते हैं। वैदिक मंत्रोच्चार के साथ उन्हें सिंहासन पर बैठाया जाता है। स्वराज्य के समस्त दुर्गों पर एक साथ तोपें गरज उठती हैं। देवालय घंटे–घड़ियालों और शंखनादों से गूँज उठते हैं। जयकारे, बधाइयाँ, तुरहियाँ, नगाड़े, ढोल, मंगल ध्वनियाँ गूँजती हैं। पंडित गंगा भट्ट राजछत्र लिए राजे पर छाया कर रहे हैं। सौभाग्यवती महिलाओं ने महाराज का तिलक किया और मंगल आरती उतारती हैं। गंगा भट्ट जी गुरु गंभीर वाणी में उच्च स्वर से घोषणा करते हैं।)

पंडित गंगा भट्ट – प्रौढ़ प्रताप पुरंदर, मुगल संहारक, सद्धर्म संस्थापक, भोंसले कुलदीपक, विमल चरित, क्षत्रिय कुलावतंस, महा–राष्ट्रधर्मेन्द्र, हिन्दू सिंहासनाधीश्वर, महान छत्रपति, शिवाजी महाराज की जय।

सामूहिक उच्च स्वर – जय जय जय।

पेशवा मोरोपंत – हिन्दवी स्वराज्य संस्थापक

शिव छत्रपति अमर रहें, अमर रहें। (कहते हुए पेशवा मोरोपंत स्वर्ण मुद्राओं से राजे का अभिषेक करते हैं।)

पंडित गंगा भट्ट – शिवाजी महाराज से इस अवसर पर शिवसंवत् आरंभ करने की घोषणा करने की अनुमति चाहते हैं।

सभासद – अवश्य अवश्य।

शिवाजी – (विनम्रता पूर्वक) हम क्षमा चाहते हैं लेकिन स्वराज्य के सेवक का कैसा संवत्? संवत् प्रवर्तन सम्राटों का होता है सेवक का तो नहीं।

पंडित गंगा भट्ट – धन्य हैं छत्रपति आपका मातृभूमि के प्रति सेवा और स्वराज्य के लिए सेवक भाव अद्भुत है। हम आपकी भावना का सम्मान करते हैं। अब आप छत्रपति के रूप में प्रजा की मंगल भेंट स्वीकारें।

शिवाजी – जैसी आपकी आज्ञा।

पंडित गंगा भट्ट – सभाजनो! शास्त्र सम्मत रीत से सिंहासन पर सुशोभित राजा साक्षात् जगदीश्वर के स्वरूप होते हैं अब आप सब अपनी भेंट उन्हें प्रस्तुत कर सकते हैं।

(सभी उच्चाधिकारी, सम्मानित अतिथिगण, प्रतिष्ठित सभासद क्रमशः आते गए और छत्रपति महाराज को बहुमूल्य न्यौछावर भेंट देकर प्रणाम करते हैं। विभिन्न राजवंशियों व राज प्रतिनिधियों में अँग्रे जी प्रतिनिधि भी हैं। निरंतर जयकारें व बधाई की आवाजें गूँज रही हैं।)

पंडित गंगा भट्ट – विभिन्न धर्माचार, शिष्टाचार सम्पन्न करते हुए राजे अब ऐरावत जैसे सुसज्जित गजराज पर चढ़कर भव्य शोभायात्रा पूर्वक जगदीश्वर मंदिर जाकर देवदर्शन लेंगे। (पहले महाराज उनके पीछे राजपरिवार, प्रमुख अतिथि और फिर प्रजा मंच से विदा लेते हैं इसी बीच मंच पर एक घोष गूँजता है गजराज की चिंघाड़, नौबत व तुरही की आवाजें।)

घोष – आचारशील, विचारशील, न्यायशील, धर्मशील, सर्वज्ञ सुशील, जाणता राजा।

यशवंत, कीर्तिवंत, वरदवंत, सामर्थ्यवंत, पुण्यवंत, नीतिवंत, जाणता राजा।

हिन्दू पदपादशाही संस्थापक छत्रपति शिवाजी राजे की जय। **(परदा गिरता है।)**

– इन्दौर (म. प्र.)

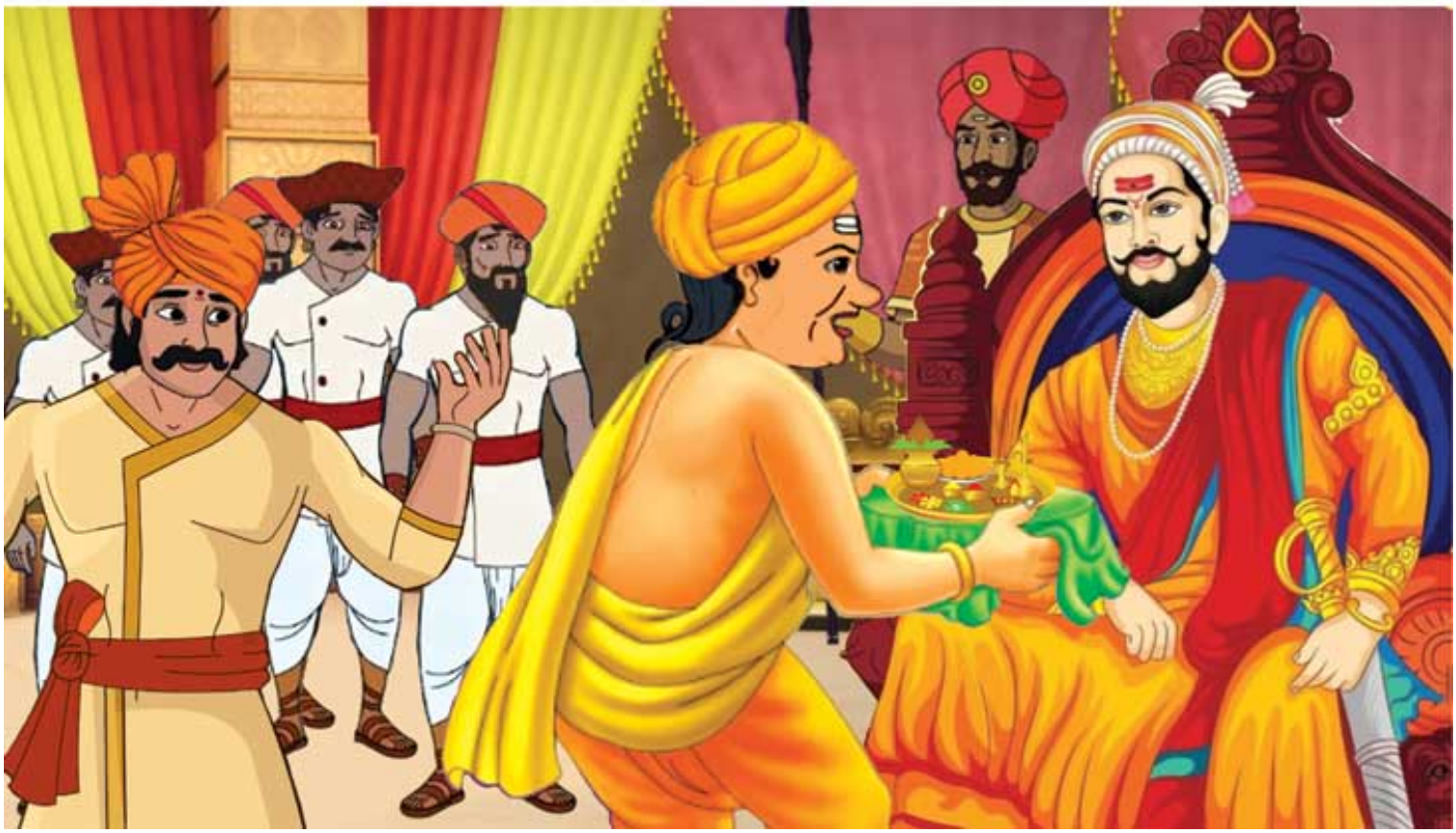

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०५/२०२४ | प्रेषण तिथि ३०/०५/२०२४ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एवं पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना